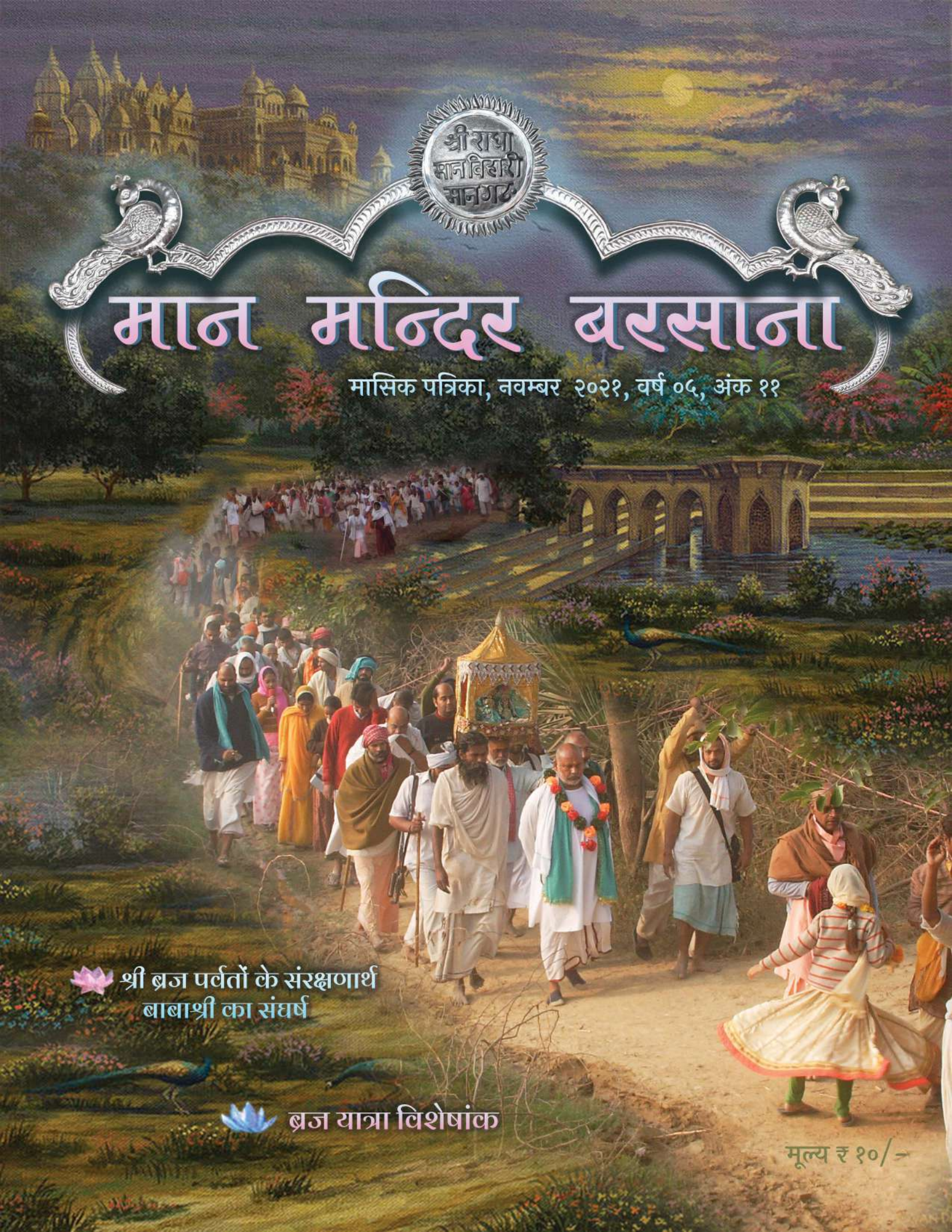

मान मन्दिर बरसाना

मासिक पत्रिका, नवम्बर २०२१, वर्ष ०५, अंक ११

श्री ब्रज पर्वतों के संरक्षणार्थ
बाबाश्री का संघर्ष

ब्रज यात्रा विशेषांक

मूल्य ₹ १०/-

श्री राधारानी ब्रज यात्रा 2021

अनुक्रमणिका

विषय- सूची **पृष्ठ- संख्या**

१ आंदोलनकारियों के विशिष्टमंडल की मुख्यमंत्री से भेंट.....०३
२ वास्तविक ब्रजभक्ति 'ब्रज-संरक्षण'.....०४
३ श्रीब्रज-पर्वतों के संरक्षार्थ बाबाश्री का संघर्ष.०६
४ श्रीभक्ति-सार 'श्रीधाम-सेवाराधना'.....११
५ ब्रजरज से ब्रजरस-प्राप्ति.....१३
६ अभाव ही अपराध..... १६
७ सर्वतापहारिणी 'श्रीभगवत्कथा'.....१९
८ परम गुरुभक्त 'श्रीबाहुबलजी'.....२२
९ 'भजन' का उपाय 'युक्ताहार' २४
१० 'श्रीभक्तिमार्ग' ही सर्वकल्याणकारी.....२६
११ परमधर्म 'श्रीइष्ट-शरणागति'.....२९

इक बार आजा कान्हा दिल में बिठा लूँ,

तेरी गली में प्यारे नजरें बिछा दूँ।
सिर पै सलोना प्यारा मोर मुकुट हो,
मेरी ये प्यासी आँखें प्यास तो बुझा लूँ।
नील कमल सी प्यारी कजरारी अँखियाँ,
सामने तो आजा मेरे आँख तो मिला लूँ।
इक बार ब्रज में तूने बाँसुरी बजाई,
फिर से बजा दे वंशी दर्द तो दबा लूँ।
बुझती है जीवन बाती तुझको बिना ही देखे,
तेरा दरस जो पाऊँ फूँक से बुझा दूँ।
सेंदूर बिना ये सूनी मांग है सिर पै मेरी,
पाऊँ चरण की धूली मांग में सजा लूँ।

(— पूज्यश्री बाबा महाराज कृत)

|| राधे किशोरी दया करो ||

हमसे दीन न कोई जग में,
बान दया की तनक ढरो |
सदा ढरी दीनन पै श्यामा,
यह विश्वास जो मनहि खरो |
विषम विषयविष ज्वालमाल में,
विविध ताप तापनि जु जरो |
दीनन हित अवतरी जगत में,
दीनपालिनी हिय विचरो |
दास तुम्हारो आस और की,
हरो विमुख गति को झगरो |
कबहूँ तो करुणा करोगी श्यामा,
यही आस ते द्वार पर्‌यो |

— पूज्यश्री बाबा महाराज कृत

संरक्षक- श्रीराधामानबिहारीलाल

प्रकाशक – **राधाकान्त शास्त्री, मानमंदिर सेवा संस्थान,**
गह्वरवन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.)
(Website :www.maanmandir.org)
(E-mail :info@maanmandir.org)
mob. Radhakant Shastri 9927338666
Braikishordas.....6396322922

श्रीमानमंदिर की वेबसाइट www.maanmandir.org के द्वारा आप प्रातःकालीन सत्संग का ८:०० से ९:०० बजे तक तथा संध्याकालीन संगीतमयी आराधना का सायं ६:०० से ७:३० बजे तक प्रतिदिन लाइव प्रसारण देख सकते हैं |

परम पूज्यश्री रमेश बाबा महाराज जी द्वारा सम्पूर्ण भारत को आह्वान –

"मजदूर से राष्ट्रपति और झोंपड़ी से महल तक रहने वाला प्रत्येक भारतवासी विश्वकल्याण के लिए गौ-सेवा-यज्ञ में भाग ले |"

*** योजना ***

अपनी आय से १ रुपया प्रति व्यक्ति प्रतिदिन निकाले व मासिक, त्रेमासिक, अर्धवार्षिक अथवा वार्षिक रूप से इकट्ठा किया हुआ सेवा द्रव्य किसी विश्वसनीय गौ सेवा प्रकल्प को दान कर गौ-रक्षा कार्य में सहभागी बन अनंत पुण्य का लाभ लें | हिन्दू शास्त्रों में अंश मात्र गौ सेवा की भी बड़ी महिमा का वर्णन किया गया है |

विशेष:- इस पत्रिका को स्वयं पढ़ने के बाद अधिकाधिक लोगों को पढ़ावें जिससे आप पुण्यभाक् बनें और भगवद्-कृपा के पात्र बनें | हमारे शास्त्रों में भी कहा गया है –

सर्वे वेदाश्च यज्ञाश्च तपो दानानि चानघ | जीवाभयप्रदानस्य न कुर्वीरन् कलामपि || (श्रीमद्भागवत३/७/४१)

अर्थ:- भगवत्तत्त्वके उपदेश द्वारा जीव को जन्म-मृत्यु से छुड़ाकर उसे अभय कर देने में जो पुण्य होता है, समस्त वेदों के अध्ययन, यज्ञ, तपस्या और दानादि से होनेवाला पुण्य उस पुण्य के सोलहवें अंशके बराबर भी नहीं हो सकता |

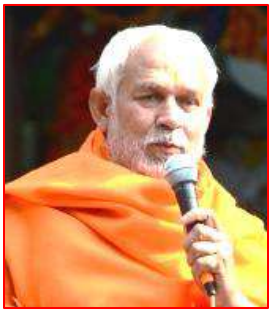

प्रकाशकीय

साधन प्रत्येक जीव के लिए आवश्यक है परन्तु हर प्राणी साधन शून्य ही बना रहता है क्योंकि अनंतानंत संस्कार उसे वैसी जीवन शैली के लिए वाद्य करते रहते हैं। इस स्थिति में भी उसके कल्याण के लिये यदि कोई सचेष्ट होता है तो केवल महा पुरुष ही। हम न नाम निष्ठ बन पाते हैं और न अन्य साधनों में अनुरक्त हो पाते हैं, महापुरषों की सहज कृपालुता सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। जैसा कि कहा है "काहू के बल भजन को काहू के आचार व्यास भरोसे कुँवरि के सोवत पाँव पसार।" धाम धामी नाम नामी में कहीं भी अखंड रूप से प्रीति हो गई तो आप सहज भवसागर पार हो गए। ऐसे ही सरलतम साधन, ब्रज की निधि पद्मश्री श्री रमेश बाबा ने गरीब अमीर सब के लिये धाम सेवन में प्रवित्त करा कर ब्रजचौरासी परिक्रमा का विधान किया। १९८८ से यह परिक्रमा आजतक प्रति वर्ष ४० दिवस पर्यन्त चलाई जारही है। इसके बड़े सकारात्मक परिणाम दिखाई पड़े। आज हजारो गांवों के लोग यात्रा से प्रेरणा लेकर गाँव गाँव प्रभात फेरी करने लगे हैं। हर वर्ष परिक्रमा कर धाम का अखंड सेवन यात्रा काल में करते हैं। यही नहीं उन सब के द्वारा अनेक जीव अध्यात्म जीवन जीने लगे हैं। राधारानी ब्रज यात्रा बड़ी ही पूण्य दायिनी है। हमारे मन में विचार आया क्यों न हम अपने मान मंदिर बरसाना पत्रिका के पाठकों का भी इस ओर ध्याकर्षण करें। आशा है आप सभी धाम सेवन में अपने को प्रवृत्त करते रहेंगे।

प्रबन्धक

राधाकान्त शास्त्री

श्रीमानमंदिर सेवा संस्थान ट्रस्ट

आंदोलनकारियों के विशिष्टमंडल की मुख्यमंत्री से भेंट

ब्रज के धार्मिक पर्वत कनकाचल व आदिबद्री को वनक्षेत्र घोषित कर खनन मुक्त करने का लिया सैद्धांतिक निर्णय;

अति शीघ्र ही कनकाचल व आदिबद्री पर्वत को किया जायेगा वन क्षेत्र में घोषित

(मुख्यमंत्री के निर्णय से संत समाज और ब्रजवासियों में खुशी की लहर)

(दोनों पर्वतों को वनक्षेत्र घोषित होने पर आयोजित की जाएगी विशाल जनसभा व सम्मान समारोह - राधाकान्त शास्त्री)

कनकाचल व आदिबद्री पर्वत पर हो रहे विनाशकारी खनन के विरोध में जारी धरने के २६० वे दिन आंदोलनकारियों के विशिष्टमंडल की बैठक मुख्यमंत्री कार्यालय में सरकार के वरिष्ठ अधिकारियों, राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक महेश जोशी व अन्य प्रमुख लोगो के साथ सम्पन्न हुई जिसमें ब्रज के परम आराध्य पर्वत कनकाचल व आदिबद्री को संरक्षित करने पर गंभीर चर्चा की गई । लंबी चर्चा के बाद दोनों पर्वतों के संरक्षण का मार्ग निश्चित किया गया । उल्लेखनीय है कि वर्ष २००९ में राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा ही भरतपुर के डीग व कामां तहसील में पढ़ रहे ब्रज के धार्मिक पर्वतों को संरक्षित वन क्षेत्र घोषित किया गया था लेकिन उस समय तहसील अंतर होने की वजह से ब्रज के प्रमुख पर्वत कनकाचल व आदिबद्री का कुछ हिस्सा संरक्षित वन क्षेत्र होने से छूट गया था जिसके कारण वहाँ बहुत बड़ी मात्रा में खनन जारी है । इस खनन के चलते दोनों पर्वतों के अस्तित्व को बड़ा खतरा पैदा हो गया था इसी को लेकर लंबे समय से साधु संत संघर्ष कर रहे हैं एवं विगत २६० दिनों से भरतपुर की तहसील डीग के ग्राम पसोपा में साधु संतों व ब्रजवासियों का धरना अनवरत जारी है । साथ ही विगत दोनों पर्वतों को खनन मुक्त कराने की माँग को लेकर ५३ दिनों से साधु संत क्रमिक अनशन पर भी बैठे हुए हैं । राजस्थान सरकार से कई स्तर की वार्ता होने के बाद उत्तर प्रदेश के पूर्व नेता प्रतिपक्ष एवं वरिष्ठ कांग्रेसी नेता प्रदीप माथुर व आदिबद्री के महंत शिवराम दास की अगुवाई में एक विशिष्टमंडल मुख्यमंत्री कार्यालय में मुख्यमंत्री के वरिष्ठ सचिवों एवं अन्य प्रशासनिक अधिकारियों से मिला जिसमें ब्रज के दोनों प्रमुख पर्वतों को संरक्षित करने के विषय में गंभीर चर्चा की गई व लंबी चर्चा के बाद ब्रज के दोनों पर्वतों को सुरक्षित करने का मार्ग तय किया गया । इसके उपरांत विशिष्टमंडल की बैठक मुख्यमंत्री आवास पर राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से संपन्न हुई जिसमें मुख्यमंत्री द्वारा दोनों पर्वतों को संरक्षित करने के निर्णय की घोषणा की गई । बैठक में विशिष्टमंडल के सदस्यों के अलावा राजस्थान के मुख्य सचेतक महेश जोशी, खान व पशुपालन मंत्री प्रमोद भाया जैन, चिकित्सा राज्यमंत्री डॉ सुभाष गर्ग, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव कुलदीप राँका, भरतपुर के जिला अधिकारी हिमांशु गुप्ता, वरिष्ठ नेता जुबेर खान सम्मिलित रहे । विशिष्टमंडल की अगुवाई कर रहे पूर्व विधायक प्रदीप माथुर ने बैठक में कहा कि ब्रज के साधु संत विगत २६० दिनों से ब्रज की संस्कृति व पौराणिक संपदा के रक्षण के लिए आंदोलनरत थे। इस बात को लेकर कांग्रेस की महासचिव प्रियंका गांधी एवं राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत से भी कई बार चर्चा की गई जिसके परिणाम स्वरूप आज राजस्थान की मुख्यमंत्री के पहल पर सभी अधिकारियों के साथ दोनों पर्वतों को संरक्षित करने का मार्ग तय किया गया है। उन्होंने कहा की राजस्थान विधानसभा के मुख्य सचेतक

महेश जोशी, नगर विधायक वाजिब अली, आईएएस अधिकारी गौरव गोयल, मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव कुलदीप राँका, विशिष्ट सचिव आरती डोगरा एवं भरतपुर के जिलाधिकारी हिमांशु गुप्ता की इसमें बड़ी भूमिका रही है। उन्होंने पूर्ण विश्वास दिलाया कि अति शीघ्र दोनों पर्वतों को वन क्षेत्र घोषित कर खनन मुक्त कर दिया जाएगा, इस बात के लिए मुख्यमंत्री द्वारा सैद्धांतिक निर्णय ले लिया गया है । इस अवसर पर उपस्थित विशिष्टमंडल के साथ आए संरक्षण समिति के संरक्षक राधाकांत शास्त्री ने मुख्यमंत्री का आभार जताते हुए कहा कि देशभर का साधु समाज एवं विश्वभर की कृष्णभक्त सदैव ब्रज की संस्कृति, पौराणिक संपदा एवं पर्वतों की रक्षा के लिए मुख्यमंत्री को याद रखेंगे एवं उन्होंने यह पुनीत कार्य करके अपना नाम अमर किया है । उन्होंने कहा कि दोनों पर्वतों के वन क्षेत्र घोषित करने के निर्णय से पूरे ब्रज में उत्सव का माहौल है एवं शीघ्र ही एक बहुत बड़ी जनसभा आयोजित कर राजस्थान के यशस्वी मुख्यमंत्री अशोक गहलोत व साथ ही समस्त जनप्रतिनिधियों का ब्रजवासियों के द्वारा सम्मान किया जाएगा । वहीं विशिष्टमंडल में आए राष्ट्रीय सलाहकार राधाप्रिय ने मुख्यमंत्री को पूर्ण आश्वस्त किया कि दोनों पर्वतों के संरक्षित होने के उपरांत राजस्थान में पढ़ रहे समूचे ब्रज क्षेत्र को विकसित एवं उसका संवर्धन करने के लिए उनकी संस्था सरकार के साथ हर संभव प्रयास करेगी व साथ ही इस वनक्षेत्र को व ब्रज के तीर्थ स्थलों को इकोलॉजिकल एवं धार्मिक पर्यटन से जोड़कर इसे एक विश्व स्तरीय पर्यटन का स्थल बनाने का पूर्ण प्रयास किया जाएगा जिससे यहां के लोगों को बड़ी मात्रा में रोजगार मिलेगा और साथ ही राज्य सरकार को भी राजस्व की प्राप्ति होगी । इस अवसर पर विशिष्टमंडल में ब्रज के प्रसिद्ध संत नरसिंह दास बाबा, जयपुर के समाजसेवी चंद्रशेखर खुटेटा, आदिबद्री के महंत शिवराम दास उपस्थित रहे ।

.....

वास्तविक ब्रजभक्ति 'ब्रज-संरक्षण'

ब्रजधाम-सेवार्थ 'बाबाश्री' का क्रान्तिकारी उद्बोधन

('श्रीबाबामहाराज' एक बार ब्रज के परमाद्भुत श्रीब्रजोपासक संत पंडित श्रीरामकृष्णदासजीमहाराज की परम पावन तिथि के सुअवसर पर संतजनों के विशेष आमन्त्रण पर श्रीवृन्दावन गये थे, वहाँ पर उपस्थित समस्त संतों, वैष्णवों और गोस्वामियों को संबोधित करते हुए ब्रजभूमि की दुर्दशा और इसकी संरक्षा के सम्बन्ध में 'बाबाश्री' ने अभूतपूर्व जागृति उत्पन्न करने वाला अति ओजस्वी व परम प्रेरणादायी व्याख्यान दिया था, जिसे सुनकर उसी समय जन-जन में 'श्रीब्रजभूमि की सेवा करने की परम मंगलकारी भावना' उदित हो गई)

श्रीबाबा – आज ब्रज की स्थिति क्या है ? परम दयनीय स्थिति है कि ब्रज के वन कट रहे हैं, 'ब्रज' के कुण्ड नष्ट हो रहे हैं, यहाँ के 'पर्वत, लीलास्थलियाँ' डायनामाइट द्वारा टूट रही हैं, यमुना तक दूषित हो गयी; क्या ये स्थितियाँ हम लोगों को दुःखित नहीं करती हैं ? श्रीचैतन्यमहाप्रभुजी ने ब्रज की लुप्त लीलास्थलियों को प्रकट किया, अपने परिकरों को ब्रज में भेजा; श्रीरूपगोस्वामीजी,श्रीसनातनगोस्वामीजी,श्रीलोकनाथ गोस्वामीजी आदि महाप्रभु के परिकर ब्रज में आये | श्रीरघुनाथदासगोवामीजीसे अधिक भजनानन्दी कौन हो सकता है, जिन्होंने राधाकुण्ड का उद्धार किया; क्या यह भजन नहीं था ? इसे सोचना चाहिए हमको | बहुत से भक्तजन 'ब्रज-सेवा' के बारे में सोचते होंगे किन्तु क्रिया में मुझे कुछ दिखाई नहीं पड़ता है, इसलिए मुझे

ऐसी बातें कहनी पड़तीं हैं कि हमारा कर्त्तव्य क्या है? अब विचार कीजिये कि मंदिर क्यों सजाये जाते हैं, 'श्रीजी- ठाकुरजी' को क्यों सजाया जाता है ? सजाया इसलिए जाता है जिससे हमारा उनमें 'चिन्मयता' का भाव जाग्रत हो | अब जब हम देखते हैं कि वृन्दावन में गटर बह रहा है, गन्दा नाला यमुना में बह रहा है तो हमारे भीतर 'चिन्मयता' का भाव कैसे आएगा ? ऐसी परिस्थितियों में किसी भी जीव के भीतर 'चिन्मयता' का भाव कैसे आ सकता है ? वृन्दावनमहिमामृतशतककार कहते हैं कि आप ब्रज में रहने आये हो किन्तु यहाँ रहते समय यह याद रखो कि 'ब्रज' चिन्मय है, इसी भाव से यहाँ रहो और इसी भाव से देखो, यही सोचो; तब तुम्हारी उपासना सफल होगी –

स्वानन्दसच्चिद्घनरूपतामतिर्यावन्न
वृन्दावनवासी जन्तुषु |
तावद् प्रविष्टोऽपि न तत्र विन्द्यते
ततोऽपराधापदवीं परात्पराम् ||

यह शतककार की घोषणा है कि यहाँ ब्रजवास करते हो तो जब तक तुम्हारी सच्चिद्घनरूपता-मति नहीं होगी, तब तक यहाँ रहने पर भी कुछ नहीं मिलना है |

ये मैं नहीं कह रहा हूँ, शास्त्र कह रहा है | इसलिए सारी उपासना का जो मूल है कि हमारे भीतर सच्चिद्घन रूपता-मति (चराचर में दिव्य भावना) आनी चाहिए, तब सारा समाज मधुर-प्रेममय होता है, धाम की उपासना सफल होती है | यहाँ तक कि यदि हम श्रीजी की सहचरी बनना चाहते हैं, मञ्जरी बनना चाहते हैं तो 'धाम' के प्रति चिन्मयता की बुद्धि रखना परमावश्यक है –

यदैव सच्चिद्रसरूपबुद्धिः
वृन्दावनवासी जन्तुषु स्यात् |
निर्व्यलीकं पुरुषस्य तदैव
चकास्ति राधाप्रियसेविरूपा ||

इसीलिए मंदिरों में 'श्रीजी-ठाकुरजी' को सजाया जाता है, श्रृंगार किया जाता है, जिससे हमारी उनके प्रति 'चिन्मयता की बुद्धि' होवे; इसी तरह धाम में हमारी चिन्मय-बुद्धि (अप्राकृत भावना) रहे, तब धामोपासना सफल होगी और नहीं तो कुछ नहीं मिलना है, यह शास्त्र कह रहा है |

राधाकेलिकलासु साक्षिणि कदा वृन्दावने पावने
वत्स्यामि स्फुटमुज्ज्वलाद्भुतरसे प्रेमैकमत्ताकृतिः |
तेजोरूपनिकुञ्ज एव कलयन् नेत्रादिपिण्डस्थितम्
तादृक्स्वोचितदिव्यकोमलवपुः स्वीयं समालोकये ||

(श्रीराधासुधानिधि - २६६)

धाम में भावना होने के बाद अपने-आप किंकरी रूप प्राप्त हो जाता है, यह धाम का चमत्कार है –

यद् राधापदकिङ्करीकृतहृदां सम्यग्भवेद् गोचरम्
ध्येयं नैव कदापि यद् धृदि विना तस्याः कृपास्पर्शतः |
यत् प्रेमामृतसिन्धुसाररसदं पापैकभाजामपि
तद् वृन्दावनदुष्प्रवेशमहिमाश्चर्यं हृदि स्फूर्जतु ||

(श्रीराधासुधानिधि -२६५)

आज स्थिति यह है कि ब्रज-वृन्दावन में अधिकतर बड़ी-बड़ी ईमारतें-भवन बने हुए दिखाई देते हैं और धाम की वास्तविक शोभा बढ़ाने वाली कुञ्ज-निकुञ्जें, वन-पर्वत, कुण्ड, यमुनाजी, झरना-झीलें इत्यादि लुप्त होती जा रही हैं | यदि ब्रज में एक भी वन-पर्वत नहीं रहा तो भागवत में ठाकुरजी की यह प्रतिज्ञा कैसे पूरी होगी जो उन्होंने नन्दबाबा से कहा था –

न नः पुरो जनपदा न ग्रामा न गृहा वयम् |
नित्यं वनौकसस्तात वनशैलनिवासिनः ||

(श्रीभागवतजी १०/२४/२४)

श्रीकृष्ण ने नन्दबाबा को बताया कि ब्रज क्या है ?
वे बोले – बाबा ! हमारे न तो कोई घर है, न ग्राम है, न पुर है; हमलोग तो वनों में रहते हैं |
परन्तु आज हालत यह है कि ब्रज के सारे वन कटते जा रहे हैं | जब मैं गह्वरवन में रहने के लिए आया तो वंशीअलीजी द्वारा रचित 'श्रीवृषभानुपुरशतक' में गह्वरवन की यह महिमा पढ़ी –

यत्र गह्वरकं नाम वनं द्वन्द्व मनोहरम् |
नित्यकेलिविलासेन निर्मितं राधया स्वयम् ||

स्वयं श्रीराधिकारानी ने इस वन को बनाया है; परन्तु जब यह वन कट जायेगा, कुछ शेष ही नहीं रहेगा तो इस बात का क्या प्रमाण रह जायेगा कि इसे राधारानी ने बनाया है, हमलोग उसे कैसे देख पायेंगे ? क्या समझेंगे कि यहाँ कभी वन था; जैसे राधाकुण्ड में कभी 'आरिट वन' था, वर्तमानकाल में राधाकुण्ड को देखकर कौन सोच सकता है कि यहाँ कभी वन था, क्या इसका कोई चिह्न है वहाँ ? बस केवल कहकर याद कर लेते हैं कि वहाँ कभी वन था; पहले यह सम्पूर्ण ब्रज-वृन्दावन ही वन था | ६० साल पहले जब मैं वृन्दावन में आया तो यहाँ रमणरेती में कोई मकान नहीं था | आज 'रमणरेती' का जो स्वरूप है, उसे वृन्दावन के लोग मुझसे अधिक जानते हैं | रमणरेती, वृन्दावन आदि में करोड़ों-अरबों रुपयों की इमारतें बन रहीं हैं किन्तु ये इमारत बनाने वाले पाँच सौ रुपये भी किसी ब्रज के वन अथवा कुण्ड की रक्षा के लिए नहीं दे सकते; ऐसे में मैं कैसे समझूँ कि ये धामनिष्ठ लोग हैं, मैं ऐसे लोगों को धामनिष्ठ नहीं मानता | धाम की सेवा के लिए यदि धन नहीं है तो कोई बात नहीं, सेवा की सद्भावनाएँ हों व श्रीजी की आराधना करें क्योंकि आराधना-शक्ति से ही ब्रज की सच्ची सेवा होती है | ब्रज-सेवा के लिए सोचने (चिन्तन करने) से भी कार्य होता है | मैं तो बहुत असहाय हूँ, न मेरे पास कोई बैंक-बैलेंस है, न मैं कहीं से कोई चन्दा करता, न दान माँगता हूँ; केवल मैं सोचता रहा और श्रीजी से प्रार्थना करता रहा – 'हे लाड़ली ! इस ब्रज में कुछ तो लीलास्थल बचने चाहिए; जो नष्ट हो गये, वे तो हो ही गये किन्तु कुछ स्थल तो बचने ही चाहिए जिससे कि आने वाली पीढ़ी उनको देखकर कहे कि यहाँ वन था |' ब्रज में पर्वतों को भी नष्ट किया जा रहा है | कामवन की चरण पहाड़ी के बारे में गर्ग संहिता में प्रमाण है किन्तु उस पहाड़ी को भी डायनामाइट के द्वारा नष्ट करने का प्रयास किया गया | व्योमासुर की गुफा पर भी विस्फोट द्वारा खनन किया गया और कामवन में ही पत्थर की खाट-शिला थी, उसे तो पूर्ण रूप से डायनामाइट के द्वारा नष्ट कर दिया गया तथा उसके नीचे इतना गहरा गड्ढा कर दिया गया कि यदि कोई पशु भी उसके अन्दर घुसे तो मर जायेगा | आदिबद्री का पहाड़ चार अरब रुपये में खनन-माफियाओं को नष्ट करने के लिए ठेके पर दिया गया था, उस समय वहाँ के मन्दिर के महन्त श्रीगोपीदासजी थे, वे मुझसे बहुत स्नेह करते थे; उन्होंने आदिबद्री के पर्वत को बचाने के लिए कड़ा संघर्ष किया, उन्हें जेल में भी बंद किया गया, फिर किसी तरह वे जेल से छूटे और कड़े संघर्ष के बाद अंत में उस पर्वत की रक्षा हो गयी |

श्रीब्रज-पर्वतों के संरक्षार्थ बाबाश्री का संघर्ष

'पं. श्रीरामकृष्णबाबा के स्मृति-महोत्सव, श्रीवृन्दावन' में बाबाश्री द्वारा हुए संभाषण से संकलित

यदि वन का स्वरूप नष्ट हो भी जाए तो पेड़ लगाने पर पुनः बन जाता है परन्तु पहाड़ों को नष्ट करने पर वे पुनः कैसे बनेंगे ? ब्रज के वन, पर्वत, कुण्ड आदि की रक्षा का अभियान आरम्भ किये जाने पर बहुत से लोग, यहाँ तक कि कुछ साधु लोग ही मुझसे कहने लगे कि यह आपने कैसा प्रपंच शुरू कर दिया ? मैं उनसे पूछता हूँ कि क्या यह ब्रजभूमि भी प्रपंच है ? यदि ब्रजभूमि और उसकी रक्षा करना प्रपंच है तो तुम लोग यहाँ रहने के लिए क्यों आये हो ? अरे ! 'ब्रज की सेवा करना' सर्वोपरि ब्रजभक्ति है |

ब्रज में श्रीजी की अष्ट महासखियों के आठ गाँव हैं; अधिकतर लोग अपनी कपोल कल्पना से कोई गाँव किसी सखी का बताते हैं जो शास्त्र-विरुद्ध है | अष्ट महासखियों के गाँवों में आठ मन्दिर बनाये गये किन्तु कुछ तो गलत बनाये गए हैं | रंगदेवीजी का गाँव डभारा है, इन्दुलेखा सखी का गाँव राँकोली है किन्तु मंदिर

बनाने वालों ने डभारे को इन्दुलेखा सखी का गाँव बताते हुए वहाँ इन्दुलेखा सखी के नाम से मंदिर बना दिया | मैंने विचार किया कि ये तो बड़ी विसंगति है | महासखियों के गाँवों के बारे में कोई कुछ कहता है, कोई कुछ कहता है | इसलिए एकबार हमने आठों महासखियों के गाँवों में यात्रा ले जाने के लक्ष्य से उसका नाम 'अष्ट महासखी ग्रामगामिनी यात्रा' रखा; यह ब्रजयात्रा अष्ट महासखियों के गाँवों में गयी...| श्रीनारायणभट्टजी के प्रामाणिक ग्रन्थ 'ब्रजोत्सवचन्द्रिका' में शास्त्रीय प्रमाण है कि कौन-सा गाँव किस महासखी का है, उनके माता-पिता का क्या नाम था ? इसकी एक छोटी-सी पुस्तक की कई प्रतियाँ छपवाकर गाँवों में ब्रजवासियों व ब्रजयात्रियों को निःशुल्क बाँटी गई हैं |

ब्रज के एक-एक लीलास्थल पर भगवान् की लीलाओं के इतने चिह्न हैं, जिनका प्रायः आजकल के लोगों को ज्ञान ही नहीं है | जैसे कि मैं एक उदाहरण देता हैं, इन स्थलों को किसी ने यदि नहीं देखा है तो कम से कम सुन तो लेगा | भागवत के दशम स्कन्ध में मैंने पढ़ा –

क्वचिद् वनस्पति क्रोडे गुहायां चाभिवर्षति |
निर्विश्य भगवान् रेमे कन्दमूलफलाशनः ||

(श्रीभागवतजी १०/२०/२८)

'ब्रज में ऐसी गुफायें थीं, जिनमें ठाकुरजी-श्रीजी रमण करते थे और वर्षाकाल में 'श्रीकृष्ण' ग्वालबालों के साथ उनमें भोजन भी करते थे |' इसको पढ़कर मैंने विचार किया कि ऐसी गुफायें ब्रज में कहाँ हैं ? कहीं तो होनी चाहिए | 'गिरिराजजी' मैं गया तो श्रीनाथजी के मंदिर के नीचे घुसा तो वहाँ बहुत-से चमगादड़ थे, वहाँ उनकी बीट पड़ी हुई थी, आगे मैं नहीं घुस पाया, गुफाओं को बहुत ढूँढ़ा किन्तु नहीं मिलीं | विचार आया कि कहीं न कहीं तो गुफायें अवश्य ही होंगी... धन्य हैं आचार्यगण !!... उस समय मुझे श्रीजीवगोस्वामीजी की श्रीमद्भागवत की 'वैष्णवतोषणी टीका' प्राप्त हुई, वह मेरे लिए एक प्रकाश- स्तम्भ बन गयी, उस टीका के द्वारा मुझे ब्रज की गुफाओं के बारे में जानकारी मिली | अन्यथा ब्रज-परिक्रमा की वृन्दावन से आजकल जितनी भी पुस्तकें प्रकाशित होतीं हैं, उनमें इस प्रकार की ब्रज-गुफाओं के बारे में कोई जानकारी प्राप्त नहीं होती है | श्रीमद्भागवत के दशम स्कन्ध का यह श्लोक है –

तस्माद् गवां ब्राह्मणानामद्रेश्चारभ्यतां मखः |
य इन्द्रयागसम्भारास्तैरयं साध्यतां मखः ||

(श्रीभागवतजी १०/२४/२५)

इस श्लोक की टीका में श्रीजीवगोस्वामीजी ने लिखा है कि इस वृन्दावन-भूमि में बहुत से पर्वत हैं –

श्रीवृन्दावन भूमौ नन्दीश्वराष्टकूटवरसानुधवलगिरि सुगन्धिकादयोबहवोऽद्रयो वर्त्तन्ते |

इसका भाव है कि वृन्दावन-भूमि के भीतर अनेकों पर्वत हैं, जैसे – नन्दीश्वर पर्वत, जहाँ नंदगाँव है, वह पर्वत महादेवजी का रूप है | 'वरसानु' – बरसाने में ब्रह्माचल पर्वत, यह ब्रह्माजी का रूप है | जब ब्रह्माजी ने तप किया, भगवान् प्रकट हुए तो ब्रह्माजी बोले कि हे भगवन् ! मैं गोपियों की चरणरज चाहता हूँ, पहले भी मैंने साठ हजार वर्ष तक तप किया था किन्तु किसी भी गोपी की चरणरज मुझे नहीं मिली, अब फिर से मैं तप कर रहा हूँ |

श्रीकृष्ण ने कहा – ब्रह्माजी ! अब आप पर्वत बन जाओ | ब्रह्माजी ने पूछा कि कहाँ बनूँ तो श्रीकृष्ण ने कहा कि बरसाने में पर्वत बनो | इस तरह ब्रह्माजी बरसाने में 'ब्रह्माचल पर्वत' बने |

श्रीजीवगोस्वामीजीमहाराज लिखते हैं – '**नन्दीश्वराष्टकूट**' – 'अष्टकूट पर्वत' सखीगिरि पर्वत से आगे है, जो अष्ट-सखियों के नाम पर है; कुछ वर्ष पूर्व वहाँ खनन हो रहा था तो मैं उस पर्वत की रक्षा के लिए धरने पर बैठा था क्योंकि वहाँ बहुत सुन्दर गुफा थी किन्तु उसे डायनामाइट के द्वारा तोड़ दिया गया | मुझे बड़ा दुःख हुआ, इसीलिए वहाँ मैं धरने पर बैठा और कीर्तन करता रहा, वहाँ दिन-रात अखण्ड कीर्तन चलता था, दस-बारह दिन बीत गये | एक दिन मानमन्दिर के दो संत रात को मेरे पास उसी पहाड़ पर आ रहे थे, उन्होंने

मुझे सूचित किया कि पहाड़ के नीचे आठ आदमी आपको गोली से मारने के लिए बैठे हुए हैं, क्योंकि जिनका अरबों का ठेका है, वे तो चाहेंगे कि खनन रोकने वाला मर जाये... |

हमारे मानमन्दिर पर बहुत से साधु रहते हैं, इनमें से कोई भी धन का संग्रह नहीं करता है, सभी साधु ब्रजवासियों के यहाँ मधुकरी माँगते हैं, ब्रजवासियों की मधुकरी का शुद्ध अन्न खाते हैं | मानमन्दिर पर रसोईघर, चूल्हा-चक्की आदि कुछ नहीं हैं; यहाँ जितने भी ब्रजवासी व साधु-संत रहते हैं, उनमें से कोई भी ब्रज-रक्षा का विरोधी नहीं है, ये लोग ब्रज-सेवा के कार्यों में बड़ा सहयोग करते हैं और उस रात भी वे लोग मेरे साथ कीर्तन कर रहे थे; मैंने सबसे कहा कि तुम लोग दुःखी मत हो और आनन्द के साथ कीर्तन करो | सभी भक्त कीर्तन के साथ नृत्य करने लगे और आश्चर्य की बात है कि अगले दिन से 'अष्टकूट पर्वत' का खनन बंद हो गया |

आज से पचासों वर्ष पूर्व 'सखीगिरि पर्वत' तोड़ा जा रहा था, वहाँ ललिता सखी का गाँव है और उस पर्वत पर ललिताजी का श्रीकृष्ण के साथ विवाह हुआ था | विवाह के समय ललिताजी वधू वेश में चरणों में मेंहदी लगाकर उस पर्वत पर चलीं तो उनके मेंहदी लगे चरणों के चिह्न शिला पर अंकित हो गये, जो आज भी मौजूद हैं, उन चिह्नों को कितना भी घिसो लेकिन वे मिट नहीं सकते, वे ललिताजी के चिन्मय चिह्न हैं, इन्हीं चिह्नों सहित उस पर्वत को तोड़ा जा रहा था ... उस समय सम्पूर्णानंदजी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री थे, वे बरसाने आये थे | सेठ हरगूलाल और श्रीजी मन्दिर के गोस्वामियों ने मुझसे कहा कि इस विषय में क्या आप मुख्यमंत्री से बात कर सकते हैं ? मैंने कहा कि अवश्य बात कर सकता हूँ ... उन लोगों ने कहा कि आप बात कीजिये ... उस समय मैं श्रीजी के मन्दिर में गया और मुख्यमंत्री से मिला ... मैंने उनसे कहा कि बरसाने के निकट स्थित 'सखीगिरि पर्वत' टूट रहा है, यह तो बड़ा धार्मिक-स्थल है ... मुख्यमंत्रीजी बोले कि हमारी सरकार धार्मिकता को अधिक महत्त्व नहीं देती है ... उनकी बात को सुनकर मैंने कहा कि यदि धार्मिकता को आप लोग महत्त्व नहीं देते हैं लेकिन जनता को तो महत्त्व देते हैं ... इस पर्वत के टूटने से ब्रज की जनता को कष्ट हो रहा है | उन्होंने मेरी बात मान ली और आगे चलकर श्रीजी की कृपा से 'सखीगिरि पर्वत' का खनन बंद हो गया |

अस्तु, श्रीजीवगोस्वामीजी की टीका का श्लोक मेरे लिए बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ, उनकी टीका के माध्यम से खोज करने पर मुझे जड़खोर के जंगलों में 'श्रीमद्भागवत में वर्णित गुफा' की उपलब्धि हुई | श्रीजीवगोस्वामी से ऊँचा महात्मा, उनसे अधिक भजनानंदी ब्रज में कौन हो सकता है ? जिन्होंने ब्रज के बारे में खोज करके अभूतपूर्व ब्रज-सेवा की, उन्होंने ब्रज की दुर्गम लीलास्थलियों को अपने ग्रन्थों के माध्यम से प्रकट किया | जीवगोस्वामीजी की ही 'वैष्णवतोषणी टीका' में मैंने ब्रज के अत्यन्त प्राचीन रासस्थल 'रासौली' के बारे में पढ़ा, वहाँ पर पाँच हजार वर्ष प्राचीन ब्रज का सबसे पुराना रासमण्डल है, वहाँ कोई भी ब्रजयात्रा नहीं जाती है | जब मैं पहली बार वहाँ गया तो देखा कि एक ऊँचे टीले पर रासमण्डल है, उस ऊँचे टीले पर खड़े होने से ही पता चलता है कि पाँच हजार वर्ष प्राचीन स्थल पर आ गये हैं | वहाँ पर श्रीनाथजी की बैठक है, कुण्ड है | श्रीजीवगोस्वामीजी की टीकाओं के द्वारा मैं इतने दुर्लभ स्थलों को खोज सका | भागवत के श्लोक (१०/२४/२५) की टीका में पर्वतों के वर्णन में जीवगोस्वामीजी ने 'धवल गिरि' और 'सौगन्धिक पर्वत' का उल्लेख किया है, इसको पढ़ने पर मैं इन स्थलों पर गया; पहले मैं 'धवल गिरि' गया, धवलगिरि 'घाटा' के पास है, जिसको उस समय तोड़ा जा रहा था | 'धवलगिरि' जाने पर मैंने विचार किया कि 'सौगन्धिक पर्वत' कहाँ है, जहाँ श्रीकृष्ण ने सौगन्ध खायी थी कि मैं ब्रज को छोड़कर नहीं जाऊँगा |

जब सौगन्धिक पर्वत पर पहुँचा तो शिला के पास मुझे 'भागवत में वर्णित गुफा' दिखाई पड़ी | मैंने सोचा कि भागवत में इसके बारे में बिल्कुल ठीक लिखा है –

क्वचिद् वनस्पतिक्रोडे गुहायां चाभिवर्षति |

(श्रीभागवतजी १०/२०/२८)

श्रीजीवगोस्वामीजी की टीका में भी इन स्थलों का वर्णन है परन्तु अभी तक कोई ब्रज-परिक्रमा इन स्थलों पर नहीं पहुँच सकी है क्योंकि इन स्थानों पर गाड़ी-मोटर नहीं जा सकतीं हैं, आज का मनुष्य सुविधावादी हो गया है; इसीलिए ब्रज के ऐसे दुर्लभ स्थलों का दर्शन कराने के लिए ही मानमन्दिर से निःशुल्क प्रतिवर्ष 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' चलती है | यद्यपि मैं ब्रजयात्रा उठाने के योग्य नहीं हूँ, किसी महात्मा ने मेरे बारे में कहा कि बाबा निःशुल्क यात्रा कराते हैं | मैं क्या यात्रा कराता हूँ, हमारे मानबिहारीलालजी यात्रा के आगे-आगे चलते हैं, उन्हीं के संरक्षण में यह यात्रा निःशुल्क रूप से प्रतिवर्ष चलती है अन्यथा मेरी क्या सामर्थ्य है क्योंकि मेरे पास तो चार पैसे भी नहीं हैं परन्तु 'ब्रजयात्रा' आरम्भ करने का मेरा उद्देश्य यही था कि ब्रज के ऐसे दुर्लभ और दुर्गम स्थल जिनका किसी को कोई पता नहीं है, उनका ब्रजप्रेमी श्रद्धालु भक्त दर्शन करें ...|

केदारनाथ पर्वत पर ऊपर चलने पर एक गुफा है, वहाँ पत्थर के बने दो शेर हैं | एक महात्मा के शाप से दो सजीव शेर वहाँ पत्थर के बन गये | वहाँ गुफा ऐसी है कि उसके भीतर तीस-चालीस व्यक्ति बैठ सकते हैं | दुःख की बात यह है कि ऐसे दुर्लभ स्थल खनन माफियाओं के द्वारा नष्ट किये जा रहे हैं | ब्रज में एक और बहुत बड़ी गुफा के बारे में आपको बताता हूँ जो भैसेड़ा ग्राम में स्थित है | यह ब्रज की सबसे बड़ी गुफा है | ब्रज के पर्वतों की जब मैंने यात्रा की तो देखा कि इन पर्वतों पर बहुत ही दुर्लभ प्राचीन कृष्णलीलाकालीन चिह्न हैं, जिनका साधारण लोगों को कोई ज्ञान ही नहीं है | मैं वृन्दावन में पंडित रामकृष्णदास बाबामहाराज की पुण्य तिथि के अवसर पर उनकी कृपा की याचना करने के लिए आया हूँ, उनको सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करने आया हूँ कि आपकी कृपा से भारत स्वतंत्र हुआ था | आपकी कृपा से बरसाने में श्रीजी मन्दिर का निर्माण हुआ क्योंकि आपकी ही प्रेरणा से बाबा श्री प्रियाशरणजी महाराज ने आपका आशीर्वाद लेकर सेठ हरगूलाल के द्वारा उसका पुनर्निर्माण कराया | आपकी कृपा से ही सरदार वल्लभ भाई पटेल ने गिरिराजजी की तलहटी में आन्यौर के पास बहुत से वृक्ष लगवाकर उस स्थान को सजाया | आप अभी भी जीवित हैं क्योंकि गीता में श्रीकृष्ण की घोषणा है –

कौन्तेय प्रति जानीहि न मे भक्तः प्रणश्यति |

(श्रीगीताजी ९/३१)

मेरे भक्त का कभी नाश नहीं होता है | मैं वृन्दावन में इसी भाव के साथ आया हूँ | ब्रज के स्थलों की रक्षा के सम्बन्ध में श्रीजी मुझे कुछ न कुछ सफलता तो दे ही रहीं हैं चाहे मैं कुछ भी नहीं हूँ, मक्खी-मच्छर हूँ |

पहले मैंने यह जानने का प्रयास किया कि ब्रज कहाँ तक विस्तृत है ? इसके लिए मैंने श्रीनारायणभट्टजी कृत ब्रजभक्तिविलास का अध्ययन किया तो उसमें पर्वतवन स्थित 'पर्वतकुण्ड' का उल्लेख है | मैं समझ गया कि पर्वतवन (पहाड़ी) तक ब्रज है | किसी ब्रजवासी ने एकबार मुझसे कहा कि आप गुफाओं के बारे में बहुत पूछा करते हैं, क्या आपने भैसेड़ा की गुफा देखी है ? मैंने कहा कि नहीं देखी है | तो उसने बताया कि वह गुफा पर्वत वन (पहाड़ी) से पहले है | तब मैं ब्रजवासियों को साथ लेकर उस गुफा के दर्शन करने गया...|

श्रीजी की कृपा से मेरे साथ बहुत से ब्रजवासी सहयोग कर रहे हैं, इनका एक संगठन भी बनाया गया जिसका नाम है – 'ब्रज रक्षक दल'; ये लोग ब्रज की रक्षा में सहयोग करते हैं, यहाँ तक कि मरने के लिए भी तैयार हो जाते हैं क्योंकि ऐसी-ऐसी विषम परिस्थितियाँ आ जातीं हैं | कुछ महीनों के प्रयत्न से पर्वतों का खनन बंद हो गया है | इसका यह परिणाम हुआ कि सात सौ मुसलमानों ने 'कामाँ बंद' का आयोजन किया और मेरे विरुद्ध प्रदर्शन किया...| रात को मेरे पास फोन द्वारा सूचना आई कि खनन-माफियाओं ने

योजना बनाई है कि कामाँ में आगमन होने पर रमेश बाबा की हत्या कर दो क्योंकि सभी पर्वतों के ठेके इन्हीं माफियाओं के पास हैं | लोगों ने मुझसे पूछा कि इस वर्ष आपकी यात्रा कामाँ कैसे जा पायेगी ? मैंने कहा कि श्रीजी का बल (भरोसा, आश्रय) है, इसलिए मुझे किसी का भय नहीं है | जबकि मेरे पास मानमन्दिर पर राजस्थान के खननमंत्री 'लक्ष्मीनारायण दवे' आये; मैंने उनसे कहा कि यदि आप पर्वतों का खनन बंद कर सकते हैं तो बंद कर दीजिये और नहीं करना है तो मत करो ...| राधारानी ही पर्वतों का खनन बंद करेंगी; मैं आपकी खुशामद नहीं कर सकता... |

अब राधारानी की कृपा से पर्वतों का खनन रुक ही गया है | खनन रुक जाने से खनन-माफियाओं के बीच बड़ा कोहराम मचा हुआ है कि किसी तरह रमेश बाबा को समाप्त कर दो... | मानमन्दिर द्वारा श्रीजी की कृपा-शक्ति से ब्रज के बड़े-बड़े सेवा-कार्य सहज ही हो रहे हैं | (बाबाश्री समस्त ब्रज-सेवाओं में सफलता का परम श्रेय 'श्रीआराधना-शक्ति' को ही देते हुए कहते हैं कि जीव में कुछ भी करने की सामर्थ्य नहीं है, केवल वह अनन्यभाव से एकमात्र अपने श्रीइष्टदेव की आराधना करे तो असम्भव कार्य भी सहज सम्भव हो जाता है क्योंकि श्रीभगवान् की आराधना में अनन्त शक्ति है...|) मैं इसी बात पर अड़ा हुआ हूँ कि इन गोस्वामीपादों ने ब्रज के बारे में जो खोज किया, जो लिखा, वह सबके प्रकाश में आवे और उसका संरक्षण हो ...|

भागवत में एक स्थान पर श्रीकृष्ण के लीलाविहार का वर्णन करते हुए शुकदेवजी कहते हैं –

एवं तौ लोकसिद्धाभिः क्रीडाभिश्चेरतुर्वने |
नद्यद्रिद्रोणिकुञ्जेषु काननेषु सरस्सु च ||

(श्रीभागवतजी १०/१८/१६)

इस श्लोक की टीका में श्रीजीवगोस्वामीजी लिखते हैं –

"श्रीवृन्दावने काननेषु तदन्तर्गतेषु काम्यकवनादिषु....."

जब मैंने इसे पढ़ा तो समझ गया कि ब्रज के लीलास्थल कहाँ-कहाँ हैं ? अतः अब इनकी खोज के लिए आगे चलना चाहिए; इसलिए मैं भैसेड़ा गाँव की ओर गया, वहाँ इतनी विशाल गुफा मिली कि जिसके अन्दर कितने ही लोग एक साथ प्रवेश कर सकते थे, उसके भीतर जल भी बह रहा था | परन्तु दुःख की बात यह थी कि उस गुफा को मुसलमान ठेकेदारों ने डायनामाइट के धमाकों द्वारा तोड़ा; गुफा का नाश तो नहीं हो सका किन्तु उसमें दरारें पड़ गयीं; राधारानी की कृपा से उसके संरक्षण के लिए हमने संघर्ष किया, एस. डी. एम. से कहकर उसका खनन रुकवाया; वहाँ के लोग उस गुफा के पर्वत को 'छोटा गिरिराज' मानते हैं और उसकी परिक्रमा करते हैं |

ब्रज के अज्ञात दुर्लभ स्थलों में एक और स्थल है डभारा गाँव में 'श्यामशिला'; पर्वत पर स्वाभाविक रूप से बने हुए काले पत्थर के दो सिंहासन हैं, उन पर कृष्ण-बलदेव बैठा करते थे और वहाँ से निकट स्थित नौबारी-चौबारी पर गुड्डा-गुड़िया का खेल खेलती हुई 'श्रीजी' का दर्शन किया करते थे | यह 'श्यामशिला' भी टूटकर नीचे लुढ़कने वाली थी क्योंकि जब लोग पहाड़ तोड़ते हैं तो उन पर स्थित सभी चीजें टूटती हैं...; किसी प्रकार से मानमन्दिर के प्रयास से 'श्यामशिला' का संरक्षण किया गया...; इस प्रकार ब्रज के पर्वतों पर अनेकों श्रीराधामाधव की लीलाओं से सम्बन्धित चिह्न हैं, जिनका स्मरण-दर्शन-स्पर्श श्रीब्रजप्रेमरस में स्नान कराता है |

श्रीभक्ति-सार 'श्रीधाम-सेवाराधना'

बाबाश्री के सत्संग (२९/८/२०२१) से संकलित

ब्रजोपासना में 'धामवास' को सबसे सरल बताया गया है | धाम के आश्रय की बात सभी महात्माओं ने लिखी है जैसे गोस्वामी तुलसीदासजी ने रामायण में लिखा है कि स्वयं भगवान् राम कहते हैं कि ये जो मेरा अवतरित धाम है, यह वैकुण्ठ से भी श्रेष्ठ है –

जद्यपि सब वैकुण्ठ बखाना | बेद पुरान बिदित जग जाना ||
अवध पुरी सम प्रिय नहीं सोऊ | यह प्रसंग जानै कोऊ कोऊ ||

पहले ही राम जी ने कह दिया कि लाखों-करोड़ों में कोई-कोई ही इस बात को समझ पाता है अन्यथा धाम की महिमा को कोई समझ नहीं पाता है |

आज धर्म के नाम पर करोड़ों रुपये दान में आते हैं लेकिन उससे केवल मठ और महल बन जाते हैं जबकि 'धाम-सेवा' भजन, तीर्थ, यज्ञ आदि से भी श्रेष्ठ है | 'वृन्दावन' जो प्रेम का धाम था, आज उसे हम लोगों ने केवल विलास का धाम बना दिया है, साम्प्रदायिक द्वेष का अखाड़ा बना दिया है |

भागवत के अनुसार ब्रज-वृन्दावन में जब ब्रह्माजी आते हैं तो भगवान् की कृपा से उनको धाम का वास्तविक स्वरूप दिखाई पड़ा – **वृन्दावनं जनाजीव्यद्रुमाकीर्णं समाप्रियम् | यत्र नैसर्गदुर्वैराः सहासन् नृमृगादयः ।**
मित्राणीवाजितावासद्रुतरुट्तर्षकादिकम् ॥

(श्रीभागवतजी १०/१३/५९, ६०)

जहाँ की विचित्र प्रेममयी स्थिति है, सृष्टि के बनाए हुए नियम टूट गए हैं तथा जो ऐसे वृक्षों से भरा हुआ है कि सारी आवश्यकतायें तुरन्त ही पूरी कर देता है व चराचर जीवों के लिए एक समान रूप से प्रिय लग रहा है और जहाँ कुत्ते-बिल्ली, सर्प-नेवले, सिंह-हिरन आदि अपने स्वाभाविक वैर को छोड़कर एक साथ रह रहे हैं, ये सब देखकर ब्रह्माजी आश्चर्यचकित हो गये ...|

आज अधिकतर धर्म के नाम पर करोड़ों रुपये कमाए जा रहे हैं किन्तु यदि यह पैसा 'धाम की सेवा' के लिये लगा दिया जाए तो साक्षात् प्रभु प्रकट हो जाएँ | श्रीधाम की उपासना से श्रीभगवान् साक्षात् प्रकट हो जाते हैं, यह निश्चित बात है, इसके भक्तमाल में सैकड़ों प्रमाण हैं | उदाहरण के लिए मीराजी वृन्दावन में आयीं तो उन्होंने यहाँ आकर क्या किया ? मीराजी अपने पद में गातीं हैं –

स्याम म्हाने चाकर राखो जी,
गिरिधारी लाल चाकर राखो जी |
चाकर रहसूँ बाग लगासूँ, नित उठ दरसण पासूँ |

'श्रीमीराजी' चित्तौड़ की महारानी थीं और महल को छोड़कर वृन्दावन में आयीं और कह रहीं हैं –

हे गिरधारीलाल ! मुझे दासता दे दो, चाकरी दे दो, उस चाकरी में नित्य ही लीलाओं का गुणगान करते हुए लता-पता, पेड़-पौधे, वन-कुञ्ज इत्यादि की सेवा करूँगी, जिससे सहज ही श्रीश्यामसुन्दर के दर्शन मिलेंगे |

कथनाशय है कि सेवा करना ही विशुद्ध प्रेममयी भक्ति है |

इसके विपरीत हमलोग वृन्दावन में आकर महल बनाते हैं, कितना अंतर है मीराजी में और हमलोगों में | मीराजी महल को छोड़कर आयीं और कहा कि मैं वृन्दावन की लताओं के नीचे रहूँगी और यहाँ हरे-हरे वृक्ष लगाऊँगी, सुन्दर बाग़ लगाऊँगी | श्रीमीराजी ने वृन्दावन में यह सेवा की और उनकी सेवा से प्रसन्न होकर श्यामसुंदर ने उन्हें दर्शन दिए | धाम-सेवा करने पर हम लोगों पर भी प्रसन्न होंगे ठाकुरजी और एक दिन अवश्य ब्रज को ब्रज बनायेंगे, अपने भक्तों को सुखी करेंगे... |

ब्रज में फिर प्रेम भरी प्यारी, मुरली की तान सुना देना |
बलराम कृष्ण दोनों भैया, वन-वन में धेनु चरा लेना ||
फिर घर-घर में मंगल होवे,
फिर दूध दही नदिया बहवें,
फिर प्रेम रूप माखन खाकर, तुम माखन चोर कहा लेना |

एकबार बालकृष्ण भगवान् ने दुर्वासाजी को रमणरेती में अपने पेट के भीतर ब्रह्माण्ड का दर्शन कराया था और ब्रह्माण्ड में ही यह सारी सृष्टि आती है; ये सब समझकरके मैंने विचार किया कि चीन, जापान इत्यादि

देशों में भगवान् की भक्ति नहीं है, सगुण-साकार भगवान् की लीला नहीं है तो यह बात (ठाकुरजी के उदर में सम्पूर्ण सृष्टि समाहित है) कैसे घटी होगी ? यह शंका मुझे हुई कि क्या भगवान् के पेट में ब्रह्माण्ड था ? ब्रह्माण्ड में तो सारी सृष्टि आती है, जबकि कथायें सब सही हैं; किन्तु इस शंका का स्वयं मन ने उत्तर दिया कि जहाँ भगवान् की भक्ति होती है, वहीं भगवान् प्रकट होते हैं, क्योंकि 'भक्तिवश्य भगवान्'; अतः मूल बात है - भक्ति | यहाँ भी जिसके अन्दर भक्ति है, उसी को अनुभव होगा; बिना भक्ति वाले को अनुभव नहीं होगा | जहाँ भक्ति की अवधारणा नहीं है तो वहाँ भगवान् भी नहीं है क्योंकि भगवान् एकमात्र भक्ति (प्रेम) के ही वश में होते हैं | जहाँ भक्ति होगी, वहीं भगवान् होगा | जिन देशों में भक्ति नहीं है, वहाँ भगवान् नहीं है | इस तरह अपने आप शंका का समाधान हो गया | चीन, जापान आदि देश ब्रह्माण्ड के भीतर आते हैं लेकिन वहाँ भक्ति नहीं है | 'भक्तिवश्य भगवान्' - कलियुग में अनन्त जीव हैं लेकिन जहाँ भक्ति होगी, वहीं भगवान् आयेंगे | भक्ति नहीं है तो भगवान् नहीं हैं | इस तरह अपने आप मेरी शंका का समाधान हो गया | इसलिए 'भक्ति' करनी चाहिए और भक्तिमार्ग ही अपनाना चाहिए | जिसके अन्दर भक्ति है, उसके अन्दर भगवान् हैं | भक्ति नहीं है तो चाहे कितना बड़ा विद्वान् है, चाहे कितना बड़ा राजा है, चाहे कितना भी बड़ा देश है, वहाँ भगवान् नहीं है | 'भक्तिवश्य भगवान्' – ये शास्त्रों में लिखा है | ऐसा हमने इसलिए कहा क्योंकि दुर्वासाजी का मंदिर ब्रज में कई जगह है – कामेर में भी है, आली ब्राह्मण में भी है और भांडीरवन में भी दुर्वासाजी की कथा प्राप्त होती है; इसका कारण क्या है ? कारण यही है कि श्रीकृष्ण की हर लीला में दुर्वासाजी आये हैं, यहाँ तक कि द्वारकालीला में भी दुर्वासाजी गये हैं, वहाँ उन्होंने कहा कि 'रुक्मिणी और कृष्ण' दोनों मेरे घोड़े बनें तब मैं द्वारिका में घूमूँगा, उनकी प्रसन्नता के लिए 'श्रीकृष्ण और रुक्मिणी' घोड़े बने और उन्हें द्वारिका की सैर करायी | अब प्रश्न है कि द्वारका कहाँ है ? वर्तमान विश्व में जो व्यवस्था है, उसमें प्राचीन विश्व के हिसाब से सात द्वीप की व्यवस्था नहीं है | चीन, भारत आदि सब देश अलग-अलग हैं | इसका उत्तर यही है कि जहाँ भक्ति है, वहीं भगवान् हैं |

हम जब छोटे थे तो 'भारत' में चीन का बड़ा भारी आतंक था और भारत 'चीन' से डरता था किन्तु अब वह भय नहीं है | ऐसा सुना है कि अब तो एक मोर्चे पर चीन पीछे हट गया है क्योंकि 'भारत' में भक्ति बढ़ रही है, यहाँ का राजा मोदी को माना जाएगा, वह आस्तिक हैं, भक्त हैं इसलिए अब चीन का पहले जैसा भय 'भारत' में नहीं रह गया है | 'भारत' की सेना के साथ टक्कर में चीन की सेना पीछे हट गयी है; क्योंकि 'भगवान्' भक्ति के वश में हैं | इसलिए जो लोग ब्रजभूमि में आते हैं, उन्हें 'भक्ति' ही करनी चाहिए | मानमंदिर की 'श्रीराधारानी ब्रजयात्रा' में भी बीस हजार लोग चलते हैं और इस यात्रा की सारी व्यवस्था श्रीजी करतीं हैं, यह दिखाई नहीं पड़ता है लेकिन बीस-पच्चीस हजार यात्रियों का प्रबन्ध अपने आप हो जाता है | मानमन्दिर के लोग पैसा नहीं रखते हैं, फिर भी यहाँ से ब्रज की सबसे बड़ी यात्रा हर साल चलती है | पहले ब्रज में सबसे विशाल संख्या में यात्रीजन वल्लभकुल की प्रसिद्ध यात्रा में चला करते थे; अब वह यात्रा टूट चुकी है | विगत वर्षों से तो यह रिकॉर्ड है कि मानमंदिर की 'राधारानी ब्रजयात्रा' ब्रज की सबसे बड़ी यात्रा बन गयी है जबकि मेरे पास पैसा नहीं रहता है, न कभी था, न है, न होगा; हम लोग निष्किञ्चन हैं, निष्किञ्चन रहेंगे; श्रीजी सदा रक्षा करतीं हैं | जहाँ भक्ति है, वहाँ अनुभव है | चाहे कोई व्यक्ति है, चाहे कोई देश है, जहाँ भक्ति नहीं है, वहाँ भगवान् नहीं हैं |

भारतवर्ष में धीरे-धीरे 'भक्ति' बढ़ रही है, जैसे प्रधानमंत्री 'श्रीनरेन्द्रमोदीजी' त्याग, वैराग्य व भारतीय संस्कृति के गौरव को प्रकट करने में सम्पूर्ण विश्व के लिए एक परमादर्श उदाहरण हैं | जबसे मोदीजी प्रधानमंत्री बने हैं, उनकी आस्तिकता के कारण दुनिया में भारत का प्रभाव

बढ़ा है और बढ़ता जाएगा, निश्चय ही बढ़ेगा ... जैसे-जैसे भक्ति बढ़ेगी, भारत शक्तिशाली बनता जाएगा और एक दिन सारा विश्व भारत की शक्ति को देख लेगा | यद्यपि अभी तो विश्व में पाँच देश हैं, जिन्हें 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की सुरक्षा परिषद् में 'वीटो पॉवर' प्राप्त है और वीटो का यह अधिकार भारत को प्राप्त नहीं है लेकिन आप लोग देख लेना कुछ समय बाद 'भारत' को भी यह 'वीटो पॉवर' प्राप्त हो जाएगी; जैसे-जैसे भक्ति बढ़ेगी, वैसे-वैसे भारत की शक्ति बढ़ेगी | अब 'भारत' के लिए चीन का भय वैसा नहीं रहा जैसा पहले था | पहले 'भारत' को 'चीन और पाकिस्तान' इन दोनों देशों का भय था, अब वह भय चला गया क्योंकि देश में भक्ति बढ़ रही है; इसलिए 'भक्तिवश्य भगवान्' – यह बात बिल्कुल सही है | हमलोग मानमंदिर में कीर्तन करते हैं और नित्य 'आराधना' होने के कारण ही यहाँ की 'ब्रजयात्रा' भारत व विश्व में सबसे बड़ी बन गयी है | १५-२० हजार से अधिक यात्री अब तो ब्रज-परिक्रमा में चलते हैं | मेरा विचार है कि यदि हमलोगों में वही निष्काम भाव से अखण्ड कीर्तन वाली आस्था बनी रही तो निश्चय ही ये 'यात्रा' जगत के जीवों का कल्याण करती रहेगी, क्योंकि भक्तवत्सल भगवान् भक्ति (प्रेम) के बन्धन में सदा के लिए बँध जाते हैं | कोई व्यक्ति हो, कोई देश हो, जहाँ कहीं भी विशुद्ध भक्ति है तो वहाँ अवश्य ही भगवान् हैं और यदि ऐसी भावमयी भक्ति नहीं है तो वहाँ भगवान् नहीं हैं | उक्त समस्त कथनाशय का सिद्धान्त-सारतत्त्व यही है कि 'सच्ची भक्ति' होनी चाहिए |

.....

ब्रजरज से ब्रजरस-प्राप्ति

बाबाश्री के राधासुधानिधि-सत्संग (१३/८/२०२०) से संकलित

ब्रह्मेश्वरादि सुदुरूह पदारविन्द
श्रीमत्पराग परमाद्भुत वैभवायाः
सर्वार्थसार रसवर्षिकृपार्द्रदृष्टे -
स्तस्या नमोऽस्तु वृषभानुभुवो महिम्ने ॥

(श्रीराधासुधानिधि - २)

(श्रीराधासुधानिधि ग्रन्थ तो है ही चमत्कारी, इसकी टीका रसकुल्या भी बड़ी चमत्कारिणी है, उसी के आधार पर हम बोल रहे हैं | राधासुधानिधि के सभी श्लोक बड़े चमत्कारपूर्ण हैं |) ब्रह्मेश्वरादि - ब्रह्मा, 'ईश्वर'-शंकर, आदि में सनकादिक इत्यादि सभी आ जाते हैं, उनके लिए भी बड़ा दुरूह 'कठिन, दुस्तर' है; सुदुरुह - अत्यन्त कठिन है, समझना ही कठिन है किन्तु उनकी कृपा से आर्द्र (गीली हुई) दृष्टि सब पुरुषार्थों की सारभूत भक्तिरस की वर्षा करने वाली है, ऐसी वृषभानुनन्दिनी की महिमा को हम नमस्कार करते हैं | 'वृषभानु' का अर्थ यह है कि अवतारकाल में तो पाँच हजार वर्ष पूर्व वृषभानुजी प्रकट हुए थे, वह समय अब नहीं है, अब तो कलियुग है इसलिए इस श्लोक में प्रयुक्त शब्द 'वृषभानु' का अर्थ है – 'वृष' - निकुञ्ज धर्म और 'भानु' अर्थात् उसको प्रकट करने वाले वृषभानुजी | यह अवतारकाल से पुराने जो नित्य परिकर हैं, उनका अर्थ करता है | निकुञ्ज धर्म के प्रकाशक, नित्य लीला के प्रकाशक जो भानुजी हैं, वे इस प्रकट संसार में आये और निकुञ्ज धर्म को प्रकट किया तथा नित्य निकुञ्ज रस को प्रकट करने वाली सखियाँ भी आ जाती हैं; इसलिए 'वृषभानु' शब्द बड़ा व्यापक बन जाता है, इसका यही अर्थ आगे भी चलेगा | ज्यों-ज्यों कलियुग बढ़ेगा, त्यों-त्यों यह रस लुप्त होता जायेगा किन्तु 'वृषभानु' शब्द वही चलेगा, चाहे कलियुग ही नहीं, कलियुग का बाप भी आ जाये ...| इसलिए रसकुल्याकार (राधासुधानिधि के टीकाकार) ने प्रथम श्लोक की व्याख्या में ही खोल दिया कि 'वृष' - जो 'नित्य धर्म, निकुञ्ज धर्म' है, उसके प्रकाशक वृषभानुजी हैं, अवतारकाल से भी पहले के 'अनादिकाल से' सनातन 'नित्य' समय के हैं और उन्हीं वृषभानुजी को आगे भी बराबर कहेंगे, नित्य लीला में भी प्रयोग करेंगे | (इसे हर आदमी नहीं समझेगा...|)

टीकाकारों ने 'वृषभानु' का अर्थ लिखा है कि वे नित्य धर्म के प्रकाशक हैं और वही अवतार में भी आये; अवतार के पाँच हजार वर्ष हो गये किन्तु वृषभानुजी आगे भी रहेंगे; इस प्रकार 'वृषभानु' - सनातन निकुञ्ज धर्म के प्रकाशक, यह अर्थ लगाया गया; निकुञ्ज के भी प्रकाशक थे, अवतारकालीनलीला के भी प्रकाशक थे और अब कलियुग में भी आश्रय लेने वालों के प्रकाशक होंगे ...|

टीकाकार भी सिद्ध हैं और उन्होंने 'वृषभानु' शब्द का यही अर्थ किया है तथा यही सनातन अर्थ है | वह 'वृष' धर्म जिसे सूर्य रूप से प्रकट करते हैं और वह रूप जहाँ प्रकट होता है, जैसे - सूर्य उदय होता है उदयाचल में, उसी प्रकार यहाँ 'बरसाना और वृन्दावन' दो स्थान टीकाकार ने बताये हैं | 'गोकुल और रावल' इसलिए छोड़ दिए क्योंकि धीरे-धीरे ये लुप्त होते जा रहे हैं, जो 'रावल' अवतारकाल में था, वह अब नहीं है, बहुत बदल गया है | 'बरसाना' वही है क्योंकि 'बरसाना, ब्रह्माचल पर्वत और गह्वरवन' ये सनातन हैं, यहाँ जब मैं पहली बार आया था तो यह पर्वत देखा, गह्वरवन देखा; इसके बाद ब्रजयात्रा में 'गोकुल, रावल' देखा किन्तु इनकी स्थितियाँ बदलती रहतीं हैं | 'रावल' गाँव जो पहले यमुना के किनारे था, अब यमुना की धारा भी बदलती जा रही है, उसकी स्थिति बदल गयी है; इस बात का मैंने रावल में पता लगाया तो पता चला कि जो गाँव पाँच हजार वर्ष पहले यमुना के ठीक किनारे था, अब वह दूर है; यमुना की धारा बदल गयी है; किन्तु 'बरसाना' वही है, यहाँ 'ब्रह्माचल पर्वत' पुरातनकाल से वैसा ही है | जैसे यमुना की धारा बदलती रहती है; वैसे 'ब्रह्माचल' नहीं बदलता है, यह अचल है; ब्रह्माजी ने यहाँ अचल (पर्वत) रूप धारण किया, काल के प्रभाव से यह बदलेगा नहीं | यमुना की धारा तो बदलती जा रही है, बदलती जाएगी लेकिन 'ब्रह्माचल' अचल है | इसलिए यहाँ जो 'रज' है, इसमें वही भाव, वही प्रभाव है | टीकाकार आगे यही लिखते हैं –

'श्रीवरसानुः श्रीवृन्दावनञ्चेति |' बरसाना को उन्होंने पहले लिया है और वृन्दावन को पीछे लिया है क्योंकि वृन्दावन का बाहरी स्वरूप बदल रहा है लेकिन टीकाकार ने 'बरसाने' के लिए 'वरसानु' शब्द का प्रयोग किया, जिसका अर्थ है 'श्रेष्ठ सानु' अर्थात् जहाँ श्रेष्ठ चोटियाँ हैं |

'श्रीवृषभानुनन्दिन्याविर्भावस्थलमेवोदयाचल' – इसी को वृषभानुजी का उदयाचल मानना चाहिए | सूर्य उदयाचल से उदय होते (निकलते) हैं, यह प्रकृति का नियम है तो वृषभानुजी का उदयाचल 'बरसाना' है, जहाँ ब्रह्माजी अचल (पर्वत) रूप में हैं | टीकाकार बड़ी सुन्दर टीका करते हैं – **स्वतः सहृदयैर्ज्ञास्यत एवेति धामनामानुक्त्या ध्यञ्जयति** – पहले 'बरसाना' लिखते हैं, उसके बाद 'वृन्दावन' क्योंकि 'वृन्दावन का स्वरूप' भी कालक्रम से बदल रहा है और ६५ वर्ष पूर्व जो 'वृन्दावन' मैंने देखा था, तब से अब तक बहुत बदल गया | इसके विपरीत 'बरसाना' में 'ब्रह्माचल' अचल है, इसका स्वरूप नहीं बदलेगा, भौतिक रूप भी नहीं बदल रहा है; इसीलिए टीकाकार ने 'वरसानु' पहले लिखा है, उसके बाद 'वृन्दावन' लिखा है | इससे पता पड़ता है कि 'श्रीराधासुधानिधि' ग्रन्थ की बड़ी सुन्दर टीका 'रसकुल्या' है और यह कालातीत है | ऐसा प्रसंग के अनुसार मैंने बताया कि 'ब्रह्माचल' बरसाने में है, यहाँ श्रीजी की जो कृपा है, वह अचल है; यहाँ ब्रह्माजी ने अचल रूप धारण किया है, इसीलिए राधासुधानिधि के इस दूसरे श्लोक में ग्रंथकार ने 'परम, अद्भुत और वैभव' – तीन शब्दों का प्रयोग किया है – **'परमाद्भुत वैभवायाः'** अर्थात् परम अद्भुत वैभव वाली 'श्रीराधारानी' | ब्रह्माजी आदि राधारानी की इस चरणरज को नहीं समझ सकते, इसीलिए इस श्लोक में **'ब्रह्मेश्वरादि सुदुरूह'** कहा गया है, 'दुरूह' नहीं, 'सुदुरूह' कहा है | 'दुरूह' तो नारदजी, सनकादिक आदि की दृष्टि से कहा है और 'सुदुरूह' उनके लिए कहा गया कि जो अवतारकालीन सिद्ध पुरुष हैं, वे भी निकुञ्ज में नहीं प्रवेश कर सकते, इसीलिए

सुदुरूह कहा है | भौतिक रूप तो बदलता जा रहा है और बदलता जायेगा | 'परम, अद्भुत, वैभव' – ये तीन विशेषण 'श्लोक -२' में दिए गये हैं; 'परम' क्यों कहा ? सबसे अधिक में 'परम' का प्रयोग होता है, इसका प्रमाण है, पद्मपुराण में ब्रह्माजी ने स्वयं कहा है – **'षष्टिवर्षसहस्राणि मया तप्तं तपः पुरा'** साठ हजार वर्ष तक ब्रह्माजी ने तप किया था नन्द के ब्रज की स्त्रियों की चरणरज-प्राप्ति के लिए अर्थात् अवतारकाल में भी नन्द का ब्रज आया और उसके पहले यहाँ नित्य निकुञ्ज था, उसकी प्राप्ति के लिए भी ब्रह्माजी ने साठ हजार वर्षों तक तप किया था और फिर भी उनको अवतारकालीन ब्रजगोपियों की चरणरज नहीं मिली | श्रीमद्भागवत में भी यह बात आई है कि 'गोपियों की चरणरज' प्राप्त करने वाला बड़भागी है |

'यद् गोकुलेऽपि कतमाङ्घ्रिरजोऽभिषेकम्' – अवतारकालीन जो गोपियाँ आयीं हैं, उनकी चरणधूलि बड़ी दुर्लभ है | इष्ट देवता की रज है यहाँ की चरणधूलि; चाहे अवतार बीत गया है, अवतार नहीं है, आगे भी कलियुग बढ़ेगा तो सब रूप बदलता जायेगा लेकिन यह 'रज' इष्ट बनी रहेगी, यह कालातीत है | पाँच हजार वर्ष बीत गये, आज भी हम लोग यहाँ बैठे हैं, यहाँ की 'रज' कालातीत है, अवतार के समय में ब्रह्माजी ने इसे तप से प्राप्त किया और अब अद्भुत है, 'वैभव, काल' से परे है यहाँ की रज; इसी बात को भागवत में भी कहा गया –

अवतार के पहले भी नित्य लीला में जो गोपियाँ हैं, उनकी चरणरज-प्राप्ति के लिए ब्रह्माजी ने तप किया और इस दृष्टि से वह 'रज' परम है, परात्पर तत्त्व है, जिस पर काल का प्रभाव नहीं पड़ता है | अवतारकाल में उस 'रज' को प्राप्त करने वाला बड़भागी है, यह ब्रह्माजी ने कहा है और वही रज 'मिट्टी' आराध्य है, इसलिए वह इष्ट-देवता है | अवतारकाल में जो नन्दबाबा थे, गोपियाँ थीं, उनकी चरणरज-प्राप्ति के लिए ब्रह्माजी ने तप किया; उस समय जो ब्रजवासी थे या गोकुल में गायें थीं, उनकी चरण-रज उनको नहीं मिली | अब तो कलियुग है, फिर कैसे प्राप्त होगी ? इसके लिए सुधानिधिकार ने इस श्लोक में कहा – परमाद्भुत वैभव | ब्रह्मा, शंकर की दृष्टि से 'वैभव' को 'परम अद्भुत' कहा, गोपीजन की दृष्टि से 'अद्भुततम' कहा और प्रियतम श्याम की दृष्टि से 'वैभव' कहा; इसीलिए तीसरे श्लोक में कहा गया – **'सद्योवशीकरणचूर्णमनन्तशक्तिम्'** – 'चरणधूलि' कैसी है, जिसके लिए 'कृष्ण' भी आतुर हैं, फिर ब्रह्माजी का क्या कहना ? परम अद्भुत है, 'परम' शब्द का प्रयोग किया | ललितादि सखियों के लिए भी 'श्रीराधारानी की चरणरज' उपास्य है, इसलिए 'परमाद्भुत' शब्द का प्रयोग किया गया | ब्रह्मा, ईश्वर आदि के साथ सनत्कुमार, नारद आदि का भी नाम लिया गया; शास्त्रों में राधामाधव की अन्तरंग लीला में इनके सखी रूप का वर्णन आता है | ब्रह्मा, शंकर, सनत्कुमार आदि का सखी वेश धारण करना सुना जाता है; इसीलिए श्लोक में 'परमाद्भुत' शब्द कहा गया है | 'परम, अद्भुत, वैभव' – ये तीन विशेषण इसीलिए दिए गये क्योंकि ब्रह्मा, ईश्वर आदि तथा कृष्ण के लिए भी श्रीजी की चरणरज-प्राप्ति दुरूह है | आधुनिक लोगों के लिए भी यह चरणरज दुरूह है, सबको यह नहीं मिलेगी क्योंकि श्रृंगार-रस अन्तरंग है | आधिदैविक रूप से नित्य स्थायी है परन्तु श्रृंगार-रस से जिनकी दृष्टि भरी हुई है, वह दृष्टि कृपा से मिलती है | दृष्टि में यदि वृष्टि धर्म लगायेंगे तो बाधा आ जाएगी | दृष्टि में वृष्टि 'कृपा' के कारण होती है | वर्षा तो होती है लेकिन चली जाती है किन्तु कृपा की वर्षा तो होती ही रहती है | किस पर होती है ? प्रणतजनों पर होती है, जो इस 'रज' का आश्रय लेते हैं; इसीलिए उनकी महिमा को यहाँ नमस्कार किया गया है, महिमा नहीं बदलेगी, बाह्य स्वरूप बदलता है | 'दृष्टि में वृष्टि' कृपा का निवास है, इसलिए अन्तरंग-लीला में भी अर्थ चला जायेगा और आज भी आ गया तथा आगे भी रहता रहेगा | अन्तरंग-लीला में ब्रह्मा, ईश्वर, शुक, नारद आदि का भी सखी वेश से जाना ग्रन्थों में लिखा है; उनका ज्ञान सबको नहीं होता है, केवल महिमा का ज्ञान होता जाएगा | बाहर का स्वरूप बदलता जायेगा किन्तु श्रीराधारानी की महिमा कभी नहीं बदलेगी |

अभाव ही अपराध

बाबाश्री के सत्संग 'धाम-महिमा' (२७/५/१९९८) से संकलित

'श्रीधाम' में ऐसी शक्ति है, जिसको हम समझ नहीं पाते | धाम के प्रति जो हमारा प्राकृतभाव है, उससे धामापराध होता है | इसीलिए वास्तविक स्वरूप की अनुभूति नहीं होती है | हमारे जो विकार हैं, वे 'ब्रजवासियों के प्रति, यहाँ के जड़-चेतन के प्रति' प्राकृतभाव ला देते हैं और इसी कारण से वास्तविक अनुभूति नहीं होती है | इसीलिए शतककार ने कहा है कि तुम ब्रजवासियों के समूह में जाकर मत रहो |

"न कुरु न वद किञ्चिद् विस्मृताशेषदृश्यम्"

ब्रजवासियों के साथ रहकर 'प्राकृतभाव' न आये, यह बड़ा कठिन है, इसीलिए प्रारम्भिक साधक को 'एकान्त में भावना' करने की बात बताई गयी |

मैं जब साठ वर्ष पहले ब्रज में आया था तो उस समय श्रीजी मंदिर के बहुत अच्छे गोस्वामीजी थे, जो सच्चे महात्मा थे, वे ग्वारिया बाबा के शिष्य थे और बहुत बढ़िया गाते थे; उन्होंने मुझसे कहा था कि यहाँ रहते समय 'सत्संग' मत करना | मैंने कहा कि अरे ! यह आप क्या कह रहे हैं ? 'सत्संग' से तो भगवान् की प्राप्ति होती है | गोस्वामीजी बोले कि 'सत्संग' से मेरा मतलब है कि साधु-समाज में जाकर मत बैठना | मैंने कहा कि यह भी आप अजीब बात कह रहे हैं | गोस्वामीजी ने कहा कि साधु-समाज में जाकर देख लेना, वहाँ तुम्हें कृष्ण-चर्चा नहीं मिलेगी; उनकी यह बात बाद में मेरे अनुभव में आई कि अधिकतर हम लोगों में राग-द्वेष ज्यादा है | विशुद्ध कृष्णगुणगान (राग-द्वेष से रहित निष्काम भक्तिमय कथा-कीर्तन) वास्तव में आजकल बहुत दुर्लभ है | असद्-चर्चाओं (निन्दा इत्यादि) के सुनने से प्राकृत भाव आ जाता है | ऐसा व्यक्ति कभी भगवान् के नित्य धाम में नहीं जा सकता जो इस धाम में रहकर राग-द्वेष युक्त बातों को कहता और सुनता है | प्रायः देखा जाता है कि मंदिरों में सत्संग के बावजूद भी वहाँ रहने वाले लोग अभाव की बातें किया करते हैं, उससे भाव नहीं बनता है | जहाँ निंदा होती है, वहाँ नहीं बैठना चाहिए | ब्रजवासियों के पास भी नहीं बैठना चाहिए क्योंकि उनके मध्य भी एक दूसरे के प्रति अभाव की चर्चा होती रहती है; इस तरह की अनात्म-चर्चा 'भाव-शक्ति' को नष्ट कर देती है, उससे इतना नुकसान होता है कि साधक की सारी साधना मिट्टी में मिल जाती है | जैसा कि बरसाने के गोस्वामीजी ने बहुत पहले कहा था, वह बात पूर्णतया सत्य है कि आजकल के साधुओं के समाज में केवल निंदा की ही चर्चा होती है, कहीं भी विशुद्ध कृष्ण-चर्चा सुनने को नहीं मिलती और ऐसा होने पर भगवान् की प्राप्ति कभी नहीं हो सकती | भागवत में स्पष्ट लिखा है कि जो अन्य वार्ताओं व अभाव की बातों को सुनते हैं, ऐसे लोग कभी भी भगवान् के धाम में नहीं जा सकते, चाहे कितना भी साधन कर लें | भागवत के तीसरे स्कन्ध में यह स्पष्ट घोषणा की गयी है –

यन्न व्रजन्त्यघभिदो रचनानुवादा –
च्छृण्वन्ति येऽन्यविषयाः कुकथा मतिघ्नीः |

(श्रीभागवतजी ३/१५/२३)

'अघभिद' - पापनाशक 'भगवान्' के 'रचनानुवाद' – 'चरित्र या लीला' के अतिरिक्त जो और बातें 'कुकथा' हम लोग सुनते हैं, जिससे वे बुद्धि को नष्ट कर राग-द्वेष पैदा कर देती हैं | हम कहते हैं कि देखो, गोपालदास ऐसा है, कोई कहता है कि श्यामदास ऐसा है, कोई कहता है कि वह आदमी ऐसा-वैसा है; ऐसी चर्चा को एक क्षण के लिए भी सुनने से अभाव पैदा हो जाता है और अभाव से सारा साधन नष्ट हो जाता है | जब इतने सत्संग के बावजूद भी साधुओं के आश्रमों में यह व्यर्थ-वार्ता रूपी बवाल घुस रहा है तो और आगे संसार में तो न जाने क्या होता होगा ? इसीलिए श्रीरुपरसिकदेवाचार्यजी ने एक बहुत बढ़िया बात कही थी –

घुसमुस घुसमुस करत हैं, कोने में के चोर |
रुपरसिक हरिव्यास की, चौहट्टे पे ठौर ||

ऐसी बातें मत करो कि छिपाकर कहना पड़े | जैसे हमें किसी की निंदा करनी है तो उससे छिपाकर करेंगे, घुसमुस-घुसमुस करेंगे; ऐसे लोग रसिक नहीं बन सकते | रसिक तो वही बनता है, जिसके पास कोई छिपाव नहीं होता | कोई चीज ऐसी नहीं है जो छिपाने योग्य है, गोपनीय है | ऐसा कोई काम न करो जिसे छिपाना पड़े | ऐसी कोई बात न बोलो जो तुमको छिपाना पड़े | ऐसी कोई चीज मत देखो, जो तुमको छिपकर देखनी पड़े | ऐसी कोई क्रिया मत करो जो तुमको छिपकर सुननी पड़े |

इसीलिए भागवत में कहा गया है –

यन्न व्रजन्त्यघभिदो....| (श्रीभागवतजी ३/१५/२३)

वे लोग धाम में नहीं जा सकते, जो पापनाशक भगवान् की लीलाओं के अतिरिक्त राग-द्वेष की कुकथायें सुनते हैं, उससे बुद्धि नष्ट हो जाती है | यदि हम किसी के बारे में सुनेंगे कि वह ऐसा है तो हृदय में उसके प्रति अभाव पैदा हो जायेगा, उससे बुद्धि नष्ट हो जाएगी | किसी ने हमसे कहा कि वह तुम्हारे बारे में ऐसा कह रहा है तो उसे सुनकर बार-बार मन में हम यही चिंतन करेंगे कि अरे, वह मेरे बारे में ऐसा कह रहा है; उससे हृदय में अभाव पैदा होगा | जबकि होना तो यह चाहिए कि कोई कुछ भी कह रहा है तो कहने दो ...| भक्त का तो लक्षण है –

कोई मोहि निंदो, कोई मोहि बिन्दो,
म्हें तो गुण गोविन्द का गास्यां |

तुम्हें मतलब क्या है निंदा और स्तुति से | इस तरह से सारी साधना नष्ट हो जाती है और ऊपर से हम सोचते हैं कि हमने तो इतनी माला कर ली, इतना पाठ कर लिया, इतना भजन कर लिया और भीतर से माला करने के बाद भी घुसमुस-घुसमुस करने में लगे रहते हैं |

यास्तु श्रुता हतभगैर्नृभिरात्तसारा-
स्तांस्तान् क्षिपन्त्यशरणेषु तमः सु हन्त ||
(श्रीभागवतजी ३/१५/२३)

व्यर्थ की बातें अभागे लोग सुना करते हैं | राग-द्वेष, निंदा-स्तुति की बातें सुनने से छः प्रकार का भग (ज्ञान, वैराग्य, अनन्त ऐश्वर्य, वीर्य, यश, श्री आदि) नष्ट हो जाता है | कुकथायें तुम्हारे सारे सार तत्त्व को खींच लेतीं हैं | एक तो भजन होता नहीं है और जो थोड़ा बहुत होता भी है तो उसे ये अभाव की बातें बिल्कुल शून्य कर देती हैं तथा भजन करने के बाद भी अशरण में, अंधकार में फेंक देती हैं | इसीलिए तो सूरदासजी ने कहा है –

श्रीपति दुःखित भक्त अपराधे |

श्रीभगवान् 'भक्तापराध' से दुःखी हो जाते हैं | स्वयं भगवान् ने वैकुण्ठ में भाषण दिया था, वे कहते हैं –

मम भक्तन सो बैर करत है,
सकल सिद्धि मोहि सो साधे ||

अंत में कहते हैं – **सुनहु सकल वैकुण्ठ निवासी,**
सत्य कहौं जनि मानहु खेद |
तेहि पर कृपा करौं मैं केहि विधि,
पाँय को पूज कंठ को छेद ||

मेरे पाँवों की तो पूजा करता है किन्तु मेरा गला काटता है | भक्तों की निंदा करता है, सुनता है, इस तरह मेरा गला काटता है | **जन सो बैर प्रीति मो सों कर,**
मेरो नाम निरन्तर लैहै |
सूरदास भगवंत वदत हैं,
मोहि भजै पै यमपुर जैहै ||

चाहे वह कितना भी मेरा भजन करे किन्तु भक्तापराधी पर मैं कृपा कर ही नहीं सकता |

अतः सुधानिधिकार ने प्रथम श्लोक में जो बरसाने या वृन्दावन को नमस्कार किया कि जहाँ राधारानी खेलतीं हैं यानि उन्होंने धाम को नमस्कार किया | सर्वप्रथम श्रीधाम को ही नमस्कार किया क्योंकि यह बहुत सरल मार्ग है | राधारानी से मिलने के लिए 'धाम' सबसे सरल उपाय है | क्यों सरल मार्ग है ? यह मैंने बता दिया कि धाम का सतत् सेवन हो सकता है अर्थात् लगातार धामवास ही हो सकता है, दूसरा कोई भी साधन

निरन्तर नहीं हो सकता है | परन्तु धाम में रहने का चमत्कार तभी दिखाई पड़ता है जब धामापराध न हो, अन्य चर्चायें न हों राग-द्वेषादि की | यह तो मेरा अनुभव है कि साठ वर्ष यहाँ रहते हुए मुझे बीत गये, इस अवधि में हजारों लोग यहाँ मानमन्दिर में रहे और फिर चले गये; जब उन्होंने भाव-पद्धति को छोड़ दिया, घुसमुस-घुसमुस करने लगे तब वे यहाँ टिक नहीं पाए और न एक-सी भावुकता रही | कितने ही लोग यहाँ आये लेकिन जीवन में जो एकरस की भावुकता होती है, वह उनमें नहीं रह पाती है; यह सबसे बड़ी गड़बड़ बात है | इसीलिए श्रीजी मन्दिर के किशोरीलालगोस्वामीजी ने मुझसे कहा था कि यदि भजन न कर सको तो सो जाना; १८ घंटे सो लेना लेकिन अन्य चर्चायें मत सुनना | जैसे कि कबीरदासजी ने कहा है –

कबिरा निंदक न मिलो, पापी मिलो हजार |
एक निंदक के शीश पर, कोटिक पाप पहाड़ ||

जो अभाव पैदा करने वाले लोग हैं, जैसे हम कहते हैं कि श्यामदास गड़बड़ है, श्यामदास कहते हैं कि रामदास गड़बड़ है, रामदास कहते हैं कि गोपालदास बड़ा गड़बड़ आदमी है | गोपालदास कहता है कि अरे, नारायण दास को नहीं देखा, वह तो तुम्हारी बड़ी बुराई करता है | इसीलिए कबीरदासजी कहते हैं कि अन्य हजार पापी चोर-बदमाश आदि भले ही मिल जायें लेकिन जो व्यक्ति अभाव पैदा कराता है, वह न मिले क्योंकि एक निंदक के सिर पर करोड़ों-करोड़ों पापों के पहाड़ होते हैं | 'अभाव या भेदबुद्धि' पैदा कराना – इन दोनों में ही समान रूप से बहुत पाप है |

अस्तु, सुधानिधिकार ने मंगलाचरण में धाम को नमस्कार क्यों किया ? श्रीजी को नमस्कार नहीं किया, उनके नाम, रूप, गुण, जन आदि को नमस्कार नहीं किया; इसका कारण यही है कि सबसे सरल है - धाम | शतककार ने लिखा है –

"लुब्धो नान्यत्र
गोपीजनरमणपदाम्भोजदीक्षासुखेऽपि"

मुझे धाम के बाहर गोपीजनरमण से नहीं मिलना है | किसी ने कहा कि यहाँ ब्रज में तो तुम्हें कुछ नहीं मिलेगा तो कहते हैं कि करोड़ों जन्म ब्रजरज में बिता दूँगा किन्तु इसी निष्ठा पर मरूँगा |

"जय श्रीभट्ट धूर धूसरि तनु, यह आशा उर धार |"

इसी कारण से सुधानिधिकार ने सर्वप्रथम धाम को प्रणाम किया | धाम में निष्ठा से रहना और धाम में जो प्राकृत-बुद्धि होती है, वह बाधक बनती है, उसके लिए मैंने भागवत का यही प्रमाण दिया कि धाम में रहते हुए अन्य वार्ताओं को नहीं सुनना चाहिए | इस तरह से भाव बढ़ता रहता है और जैसे ही हम अन्य वार्ताओं को सुनते हैं तो भाव सूख जाता है; तभी तो व्यासजी ने कहा है –

"व्यास पपीहा बन घन सेव, दुःख सरिता जर सूख |"

धाम में पपीहा बनकर रहना तो तुरंत तुमको धाम का चमत्कार मिल जायेगा | पपीहा केवल स्वाती नक्षत्र का जल पीता है, अन्य जल को नहीं पीता है |

इसीलिए व्यासजी ने कहा है कि धाम में पपीहा बनकर रहो | केवल राधामाधव का चरित्र सुनो बाकी अन्य जो अभाव की बातें है कि वो ऐसा, ये वैसा – इन सबको छोड़ दो | अब तुम पपीहा बनकर गन्दी नाली का पानी पियोगे तो फिर 'धाम महाराज' क्या करेंगे ? इसलिए नित्य निरन्तर कथा-कीर्तन रूपी रसामृत का पान करते रहो तो श्रीधाम की सच्ची कृपा सहज ही मिल जाएगी |

गौ-सेवकों की जिज्ञासा पर माताजी गौशाला का
Account number दिया जा रहा है –
SHRI MATAJI GAUSHALA, GAHVARVAN, BARSANA, MATHURA
Bank – Axis Bank Ltd **A/C – 915010000494364**
IFSC – UTIB0001058 **BRANCH – KOSI KALAN**
MOB. NO. - 9927916699

सर्वतापहारिणी 'श्रीभगवत्कथा'

बाबाश्री के सत्संग 'गोपीगीत' (९/४/१९९६) से संकलित

श्रीभगवान् के भीतर छः गुण हैं तो श्रीकृष्ण-कथा में भी छः गुण हैं; इसीलिए भक्तजन विरह में मरते नहीं हैं | श्रीवल्लभाचार्यजी ने कथा में छः विशेषण माने हैं – तप्तजीवन, कविभिरीडित, कल्मषापह, श्रवणमंगल, श्रीमत् और आततम्; ये छः गुण कथा में होते हैं और इसीलिए भगवान् की कथा कहने वाला कभी मरता नहीं है | श्रीभगवद्-कथा का पहला गुण है – तप्तजीवनम्; देह-गेहासक्त लोग संसार में जल रहे हैं, ये संसार एक भट्टी है; तीन लकड़ियाँ हैं, जो आग जलाती हैं | जैसे - चूल्हे में एक लकड़ी से उतनी आग नहीं जलती है, जब तीन लकड़ियाँ मिलती हैं तब तेजी से आग जलती है | तीन गुण (सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण) तीन लकड़ियाँ हैं और ये तीन तरह की आग जलाती हैं – आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक; यह तीन तरह की आग हर व्यक्ति को जला रही है | आध्यात्मिक आग दो तरह की है - एक शरीर में और एक मन में | प्राणियों से हमें जो दुःख मिलता है, वह है 'आधिभौतिक आग' | प्रकृति द्वारा जो कष्ट मिलता है, वह है 'आधिदैविक आग' |

जैसे कहीं आग लग गयी, पानी नहीं बरसा तो आग जलाती रहती है; वैसे ही ये तीन दुःख (ताप) जीव को हमेशा जलाते रहते हैं, हर आदमी को भूँजते रहते हैं | जो लोग नित्य कथा सुनते हैं, उनको जीवन की प्राप्ति होती है और आग कम होती रहती है क्योंकि यह कथा रूपी अमृत ताप-निवर्तक है | सारा संसार जानता है कि अमृत के पीने से जीव अजर-अमर हो जाता है, तब कोई भी शरीर आदि के ताप नहीं व्यापते हैं; इसीलिए इससे दो गुण लिए गये - वैराग्य व ज्ञान | **'वैराग्यं भगवतो ज्ञानं वा सर्वताप निवर्तकम् |'** वैराग्य से भी ताप नष्ट होता है और ज्ञान से भी | मनुष्य दुःखी क्यों होता है - ज्ञान के न होने से, यदि भक्तिमय ज्ञान हो तो संसार में दुःख नाम की चीज है ही नहीं | श्रीभगवान् कहते हैं –

श्रद्धावाँल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः |
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति ||

(श्रीगीताजी ४/३९)

ज्ञान किसको मिलता है ? जिसमें श्रद्धा हो व तत्पर हो अर्थात् साधन में लगा हो; साधन में कैसे लगा हो ? इन्द्रियों को संयत करके (रोककर के), गड़बड़ तरीके से नहीं; तब ज्ञान की प्राप्ति होती है |

तीन बातें होनी चाहिए – (१) श्रद्धा (२) साधन (३) संयम; श्रद्धा के साथ साधन, 'तत्परता' - साधन | कोई कहे कि हमारी भगवान् में बड़ी श्रद्धा है और दिनभर वह ताश खेलता है या व्यर्थ चर्चा करता है तो गलत है; | कोई आदमी व्यर्थ के खेलों में समय नष्ट करता है, यदि उससे कहो कि भजन किया करो तो कहता है कि 'भगवान्' तो मेरे हृदय में बस रहे हैं, मेरी लौ वहीं लग रही है; क्या यही है श्रद्धा का स्वरूप ? श्रद्धा का मतलब है तत्पर होना अर्थात् साधन में निरन्तर लग जाना | हमारी श्रद्धा है भगवान् में और हम लग रहे हैं विषयों में तो फिर 'श्रद्धा' कहाँ रही ? श्रद्धा में 'धा' माने धारण करना; धारण तो कर रहे हो विषयों को और कहते हो कि हमारी प्रभु में श्रद्धा है तो यह गलत है | गीता के श्लोक (४/३९) के बारे में आचार्यजन लिखते हैं कि 'श्रद्धावान, तत्परः और संयतेन्द्रियः' का आपस में सम्बन्ध है; ये तीनों एक साथ नहीं हैं तो इसका मतलब वहाँ कुछ नहीं है, केवल बात ही बात है | श्रद्धा है तो तत्परता अर्थात् साधन में लग जाओगे न कि विषयों में | ऐसा नहीं जैसे कोई कहता है कि हमारी भगवान् में बड़ी श्रद्धा है, ताश तो हम ऐसे ही खेल रहे हैं; हमारी बड़ी श्रद्धा है कीर्तन में लेकिन दिन-रात टेलीविजन देखते हैं; अरे, आँखों से तुम विषयों को पी रहे हो और कहते हो कि हमारी बड़ी श्रद्धा है कथा-कीर्तन में ...! यह झूठ बात है, अपने आप को धोखा देते हो |

'तत्पर' माने होता है कि श्रद्धा के साथ सतत साधन में लग गये, यदि दृढ़ता के साथ करते रहोगे तो मंजिल

अवश्य मिल जाएगी | यदि हम निरन्तर साधन कर रहे हैं और इन्द्रियाँ असंयमित (बहिर्मुख, बाहरी विषय-सुख में लगी हुई) हैं तो ऐसा साधन करने से कोई लाभ नहीं होगा; जैसे किसी को डायबिटीज की बीमारी है, डॉक्टर उससे कहता है कि मीठा मत खाया करो; मरीज कहता है कि ठीक है, नहीं खाऊँगा; वह दवा ले गया और दस-पाँच दिन के बाद डॉक्टर के पास पहुँचा ...|

डॉक्टर – "तुम्हारा रोग कुछ घटा है कि नहीं, क्या तुमने मीठा खाना छोड़ दिया ?"

मरीज – "अब मैं दुकान पर मीठा नहीं खाता हूँ, घर में थोड़ा-बहुत प्रसाद ले लेता हूँ|

डॉक्टर – "अरे मूर्ख, मीठा खाना पूरी तरह छोड़ दे | दुकान पर मीठा छोड़कर अब घर में खाने लग गया, उसे भी छोड़ दे |"

मरीज घर गया और कुछ दिन बाद फिर डॉक्टर के पास पहुँचा तो उसने पूछा – "क्या तुमने अभी भी मीठा खाना नहीं छोड़ा ?" मरीज बोला कि केवल चाय में थोड़ा-सा मीठा ले लेता हूँ, इसमें तो कोई दोष नहीं है ...| तब डॉक्टर ने कहा कि तेरा डायबिटीज ठीक होने वाला नहीं है|

इसलिए 'तत्परता' का मतलब होता है पूर्ण रूप से इन्द्रियों को वश में करके साधन में लगना; कभी-कभी गड़बड़ करना नहीं | सच्चा साधन वही है जो श्रद्धापूर्वक इन्द्रिय-संयम के साथ किया जाये; तब जाकर तुमको 'ज्ञान' की प्राप्ति होगी –

'ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति |'

'ज्ञान' की प्राप्ति के बाद बहुत शीघ्र तुमको अपने आप शाश्वत शान्ति मिल जाएगी | ऐसा हो ही नहीं सकता कि सूर्य निकले और अँधेरा टिका रहे | ऐसा हो ही नहीं सकता कि ज्ञान हो और तुमको शान्ति की प्राप्ति न हो | ऐसा भी नहीं हो सकता कि श्रद्धा और संयत-इन्द्रिय के साथ ठीक से साधन करने पर तुमको 'ज्ञान' की प्राप्ति न हो | ऐसा हो ही नहीं सकता कि तत्परता है और संयतेन्द्रियता नहीं है; ऐसा हो ही नहीं सकता कि श्रद्धा है और साधन न हो; आप इनका जोड़ा बनाकर देखो, सब चीजें क्रमबद्ध हैं | श्रद्धा है तो तत्परता अर्थात् साधन होगा | साधन होगा तो अपने आप इन्द्रिय-संयम होगा; बस, उसके बाद अपने आप ही ज्ञान और शान्ति की प्राप्ति हो जायेगी | सही रास्ते पर चलते चलो तो असली मंजिल 'भक्ति' की प्राप्ति सहज ही हो जाएगी | सही रास्ता यही है – श्रद्धा, उसके बाद तत्परता अर्थात् सतत साधन; साधन के बाद संयम, जिससे कि साधन का फल बाहर न जाये | याद रखो, जो हम साधन (भजन-कीर्तन) करते हैं और बीच में गड़बड़ कर लेते हैं तो उससे उसका चमत्कार चला जाता है, यह विशेष ध्यान देने योग्य बात है; भगवान् ने इस बात को भागवत में कहा है –

यो वै वाङ्मनसी सम्यगसंयच्छन् धिया पतिः |
तस्य व्रतं तपो दानं स्रवत्यामघटाम्बुवत् ||

(श्रीभागवतजी ११/१६/४३)

यदि कोई सत्संग-कीर्तन इत्यादि साधन तो कर रहा है किन्तु अपनी इन्द्रियों और मन को विषयों से नहीं रोक रहा है, बीच-बीच में गड़बड़ करता रहता है, 'सम्यक्' माने अच्छी तरह नहीं रोकता है तो उसका व्रत, उसकी तपस्या, उसका दान आदि सब चू जाता है; जैसे किसी घड़े में छेद है और उसमें ऊपर से पानी डालते जाओ तो सारा पानी घड़े से निकलता जायेगा; ये भगवान् के वाक्य हैं | इसी तरह शरीर को भगवान् ने घड़ा कहा है, विषय-लोलुपता के कारण इस शरीर में से सब चीजें चू जायेंगी, यदि हम जितेन्द्रिय (अन्तर्मुखी) नहीं बने तो व्रत जितने किये हैं, वे चू जायेंगे, जो कुछ भी तपस्या की है, चू जाएगी, जितना भी दान किया है, वह सब चू जायेगा; सब साधन शरीर से निकल जायेगा | इसीलिए जैसा कि गीता में भगवान् ने कहा है साधन के साथ-साथ संयतेन्द्रिय भी होना चाहिए | जो बात भगवान् ने भागवत में कही है, वही गीता में कही है कि श्रद्धावान बनो, तत्पर बनो और संयतेन्द्रिय बनो, उसके बाद तुमको हर हालत में 'ज्ञान' प्राप्त होगा किन्तु ये तीनों बातें

तो होनी चाहिए | इसी कारण से वल्लभाचार्यजी 'ज्ञान-वैराग्य' को ताप-निवर्तक मानते हैं | बहुत से निंदक लोग वल्लभ सम्प्रदाय की बहुत आलोचना करते हैं कि वहाँ 'ज्ञान-वैराग्य' की बातें नहीं बतायी जाती हैं; ऐसे लोग संकीर्ण दिमाग के होते हैं, वे पढ़े-लिखे होते नहीं हैं, ग्रन्थों का अध्ययन करते नहीं हैं, मेरा-तेरा के दुराग्रह में पड़कर अन्य सम्प्रदायों के प्रति दुर्भाव लेकर चलते हैं और सोचते हैं कि केवल हमारे सम्प्रदाय के आचार्य ने ही सत्य का प्रतिपादन किया है, अन्य सम्प्रदायों के आचार्य गलत बोलते हैं; इस तरह ये लोग 'मेरा-तेरा' की माया लेकर चलते हैं और उनको कुछ मिलता नहीं है बल्कि अँधेरे में ही पड़े रहते हैं |

श्रीवल्लभाचार्यजी ने तो स्पष्ट कहा है कि जब तक तुम्हारे भीतर अज्ञान है, आसक्तियाँ हैं, राग-द्वेष है; तब तक जलते रहोगे, कभी सुखी नहीं हो सकते | जब तुम्हारे भीतर ज्ञान आएगा, वैराग्य आएगा तभी तुम्हारा ताप हटेगा | प्रश्न उठता है कि क्या इसके लिए 'ज्ञान-वैराग्य' पाने का प्रयास करें ? नहीं-नहीं, केवल कथा सुनो | कथा सुनने से अपने आप ही ज्ञान-वैराग्य की प्राप्ति हो जाएगी और सभी ताप हट जाएँगे; वल्लभाचार्यजी महाराज यही कह रहे हैं | बहुत से लोग 'ज्ञान-वैराग्य' के नाम से ही चिढ़ते हैं और कहते हैं कि हम तो भक्तिमार्गी हैं, हमें 'ज्ञान-वैराग्य' की क्या आवश्यकता ? नहीं, भक्ति के फलस्वरूप 'ज्ञान-वैराग्य' तो स्वतः ही आयेंगे |

श्रीभागवतजी में सूतजीमहाराज कहते हैं –

वासुदेवे भगवति भक्तियोगः प्रयोजितः |
जन्यत्याशु वैराग्यं ज्ञानं च यदहैतुकम् ||

(श्रीभागवतजी १/२/७)

भगवान् की भक्ति करने से 'ज्ञान, वैराग्य' अपने आप आ जायेंगे | जैसे किसी लड़की का विवाह होता है तो पति के पास रहने से अपने आप ही संतान की उत्पत्ति होती है; यदि संतान उत्पन्न नहीं होती है तो इसका मतलब है कि वह स्त्री बाँझ है | इसी तरह श्रीसूतजी कहते हैं कि भक्ति करने पर दो पुत्र 'ज्ञान, वैराग्य' अपने आप ही पैदा हो जायेंगे, अलग से 'ज्ञान, वैराग्य' नहीं करने पड़ेंगे, वे तो स्वतः ही उत्पन्न हो जाएँगे और उससे तीनों प्रकार के ताप सहज ही सदा के लिए नष्ट हो जाते हैं |

परम गुरुभक्त 'श्रीबाहुबलजी'

बाबाश्री के सत्संग (१९/१२/२००९) से संकलित

अभिलाष अधिक पूरन करन ये चिंतामनि चतुरदास |
... हरिभू, लाला, हरिदास, बाहुबल, राघव आरज...||

(श्रीनाभाजी कृत भक्तमाल, छप्पय – ९९)

'बाहुबलजी' निम्बार्क सम्प्रदाय में श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी के कृपापात्र थे | श्रीहरिव्यासदेवजी के बारे में में भक्तमालकार श्रीनाभाजी ने लिखा है –

"हरिव्यास तेज हरि भजन बल देवी को दीक्षा दई"

(श्रीभक्तमालजी, छप्पय – ७७)

आपने 'देवी' को वैष्णवी-दीक्षा दी थी | प्रतापी गुरु के प्रतापी शिष्य होते हैं, आपके शिष्य 'बाहुबलजी' भी बड़े प्रभावशाली संत थे; इनका 'बाहुबल' नाम कैसे पड़ा ? इस प्रसंग में प्रख्यात व प्रेरणादायी एक कथा है –

एक बार किसी राजा के राज्य पर शत्रु राजा ने आक्रमण किया | राजा बहुत देर तक लड़ा फिर उसने विचार किया कि शत्रु राजा की बहुत बड़ी सेना है और इससे मैं लड़ नहीं सकूँगा, वह अपना महल और सेना आदि सब कुछ छोड़कर बाहुबलजी की शरण में गया | 'बाहुबलजी' समर्थ महापुरुष थे, जिनके गुरु हरिव्यासदेवजी ही इतने प्रतापी थे कि उन्होंने देवी को कंठी दी | भारतवर्ष में बड़े-बड़े शक्तिशाली महापुरुष हुए हैं | बाहुबलजी ने शरणागत राजा से कहा – "राजन् ! डरो नहीं, हमारे आश्रम में बैठ जाओ और भगवान् का स्मरण करो |"

आपत्ति में मनुष्य को 'आपत्ति' की याद नहीं करना चाहिए, उस समय 'भगवान्' को बेचारा जीव याद नहीं कर पाता है | बाहुबलजी के आदेश से राजा 'भजन' करने के लिए बैठ गया; इधर शत्रु सेना उसे पकड़ने के लिए आ रही थी | बाहुबलजी ने अपनी भुजाओं से सेना को स्तम्भित कर दिया, इसमें आश्चर्य नहीं करना चाहिए क्योंकि बाहुबलजी के पास गुरु-शक्ति थी | जिसकी शरणागति होती है; उसकी शक्ति, उसके गुण अवश्य ही शरणागत व्यक्ति के पास आ जाते हैं | यदि शरणागति सही है तो निश्चित ही वही संस्कार, वही गुण आ जाते हैं | श्रीमद्भागवत में नारदजी कहते हैं –

ममैते मनसा यद्यदसावहमिति ब्रुवन् |
गृह्णीयात्तत्पुमान् राद्धं कर्म येन पुनर्भवः ||

(श्रीभागवतजी ४/२९/६२)

जहाँ ममता होती है, उसके स्वभाव के गुण, शक्ति या दुर्बलता 'ममता करने वाले' के अन्दर आ जाती है | पातञ्जलि भगवान् ने एक सूत्र बनाया है –

वीतराग विषयं वा चित्तम् |

(पातञ्जलि-योगदर्शन १/३७)

'वीतराग पुरुष' की शरणागति है तो बिना कहे ही 'वीतरागता' आ जाएगी | संसारी मनुष्य की शरणागति अथवा उसमें ममता है तो उसके सारे गुण या अवगुण आश्रित मनुष्य में आ जाते हैं |

बाहुबलजी के चरित्र में यह बात मिलती है कि उन्होंने ऐसे परम रसिक महापुरुष से दीक्षा ली, जिन्होंने देवी को भी कंठी दी, इतने बड़े वे श्रीजी के भक्त थे; दैवी शक्तियाँ भी श्रीहरिव्यासजी के सामने झुकतीं थीं; बाहुबलजी की अपने गुरुदेव में सच्ची शरणागति थी | यदि शरणागति सही होती है तो संसार की कोई भी शक्ति 'भक्त' के सामने खड़ी नहीं हो सकती, चाहे वह भगवती दुर्गा ही क्यों न हों | जैसे - श्रीभागवतजी में महादेवजी ने भगवती पार्वतीजी से 'भक्त की शक्ति' का वर्णन किया है | एकबार महादेवजी बड़े-बड़े ब्रह्मवादी ऋषि-मुनियों की सभा में पार्वतीजी के साथ मैथुन-अवस्था में बैठे हुए थे; उस सभा में किसी में न कोई शंका थी, न कुतर्क था | उसी समय चित्रकेतुजी विमान पर बैठकर आकाशमार्ग से होकर वहाँ से निकले, वे भगवद्भक्त थे, उन्होंने ऊपर से ही कहा कि शिवजी इस प्रकार सभा में मर्यादा-उल्लंघन क्यों करते हैं ? यह तो एकान्त का कार्य है |

शंकरजी ईश्वर हैं, समर्थ हैं और इस सभा में भी समर्थ लोग बैठे हैं, इनके मन में कोई विकार नहीं है; उस समय

पार्वतीजी ने क्रोधित होकर चित्रकेतु को शाप दे दिया कि तुम असुर बन जाओ | शाप देने पर भी चित्रकेतु तुरन्त ही असुर नहीं बने, वे विमान से उतरकर नीचे आये और उन्होंने भगवती से कहा – 'अच्छा देवी ! मैं आपका शाप स्वीकार करता हूँ |' यह देखकर दुर्गा को आश्चर्य हुआ कि इसमें इतनी शक्ति है कि मुझसे कहता है कि मैं आपका शाप स्वीकार करता हूँ | तब वहाँ महादेवजी ने कहा –**इति भागवतो देव्याः प्रतिशप्तुमलन्तमः |**

मूर्ध्ना सञ्जगृहे शापमेतावत्साधुलक्षणम् ||

(श्रीभागवतजी ६/१७/३७)

हे देवी ! यह तुमको भी शाप दे सकता है, तुमको शाप देने की सामर्थ्य इसमें है, इसने तुम्हारा शाप स्वीकार करके तुम पर अनुग्रह किया क्योंकि यह 'भक्त' है |

इससे पता चलता है कि चाहे भगवती दुर्गा हों अथवा कोई भी हो, 'शरणागत भक्त' का अनिष्ट करने की सामर्थ्य किसी में नहीं है |

श्रीभागवतजी में वर्णित है कि एकबार 'जड़भरतजी' को 'भद्रकाली' के सामने चोरों द्वारा बलिदान के लिए लाया गया, उस समय देवी के शरीर में भयंकर दाह उत्पन्न हो गया – **दन्दह्यमानेन वपुषा सहसोच्चचाट सैव देवी भद्रकाली ...|** (श्रीभागवतजी ५/९/१७)

'भद्रकाली' के शरीर में दाह उत्पन्न हुआ, जिससे वे प्रतिमा फोड़कर प्रकट हो गयीं तथा जड़भरतजी का बलिदान करने को तैयार दस्युओं के सिर तलवार से काटकर जड़भरतजी के आगे नृत्य करने लगीं |

ऐसे प्रसंगों की अनेकों कथायें हैं | बाहुबलजी के ऊपर श्रीगुरुदेव की कृपा थी | 'सद्गुरुदेव' की यदि सच्ची शरणागति है तो भगवान् तक उस गुरु-भक्त का कुछ नहीं कर सकते, लेकिन शरणागति सही होनी चाहिए |

जिस समय 'बलि' ने समस्त देवताओं को पराजित करके उन्हें स्वर्ग से निष्कासित कर दिया, उस समय देवराज इन्द्र अपने गुरुदेव श्रीबृहस्पतिजी के पास गये | तब बृहस्पतिजी ने इन्द्र से कहा कि तुम जैसे सैकड़ों इन्द्र भी बलि के सामने खड़े नहीं हो सकते |

भवद्विधो भवान्वापि वर्जयित्वेश्वरं हरिम् |

नास्य शक्तः पुरः स्थातुं कृतान्तस्य यथा जनाः ||

(श्रीभागवतजी ८/१५/२९)

'भगवान् को छोड़कर तुम या तुम्हारे जैसे सैकड़ों इन्द्र भी बलि के सामने खड़े नहीं हो सकते जैसे काल के सामने कोई खड़ा नहीं हो सकता |' ये बलि की आराधना-शक्ति का प्रभाव था | इसी प्रकार आराधक के सामने भी कोई खड़ा नहीं हो सकता | आराधक का अपराध तो शंकरजी भी नहीं सह सकते हैं | यह बात श्रीभागवतजी में रहूगणजी ने कही है –

न विक्रिया विश्वसुहृत्सखस्य
साम्येन वीताभिमतेस्तवापि |
महद्विमानात् स्वकृताद्धि मादृङ्
नङ्क्ष्यत्यदूरादपि शूलपाणिः || (श्रीभागवतजी ५/१०/२५)

सच्चे आराधक का अपराध यदि शूलपाणि शंकर भी करेंगे तो नष्ट हो जायेंगे | ये सब बातें इसीलिए कही गईं क्योंकि बाहुबलजी की कथा बड़ी विचित्र है, शत्रु राजा की सम्पूर्ण सेना को उन्होंने केवल अपनी भुजाओं के द्वारा ही स्तम्भित कर दिया क्योंकि जिस राजा पर हमला किया गया था, वह बाहुबलजी की शरण में आया था और शत्रु राजा की सेना बड़ी प्रबल थी | उन्होंने उस राजा से कहा कि तुम केवल मेरे आश्रम में बैठकर भगवत्स्मरण करो, डरो नहीं |

दुःख के समय हम जैसे कमजोर लोग दुःख का स्मरण करते हैं, यह गलत बात है | उस समय दुःख ही याद आता है,भगवान् याद नहीं आते हैं | श्रीनारदजी ने भक्ति महारानी से कहा था –

वृथा खेदयसे बाले अहो चिन्तातुरा कथम् |
श्रीकृष्णचरणाम्भोजं स्मर दुःखं गमिष्यति ||

(श्रीपद्मपुराणोक्त भागवत-माहात्म्य २/१)

हे देवी ! तुम दुःखी क्यों होती हो, दुःख करने की जगह श्रीकृष्ण के चरणकमलों का स्मरण करो, दुःख समाप्त हो जाएगा | जितनी देर हम दुःख की याद करते हैं, उतनी देर तक हमें भगवान् की याद करनी चाहिए |

'भजन' का उपाय 'युक्ताहार'

बाबाश्री के सत्संग (२५/२/२००३) से संग्रहीत

'भगवान्' ही प्रेममय हैं, भगवान् ही रसमय हैं; यह जीव को ज्ञान ही नहीं है | 'जीव' को उसी से मिलने की इच्छा होती है जिसका उसे ज्ञान होता है | एक शराबी को शराब पीने की इच्छा होती है क्योंकि शराब का उसको ज्ञान है |

श्रीभगवान् ने श्रीगीताजी में कहा है –

ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता त्रिविधा कर्मचोदना |
करणं कर्म कर्तेति त्रिविधः कर्मसङ्ग्रहः ||

(श्रीगीताजी १८/१८)

मनुष्य को उसी कर्म की प्रेरणा होती है, जिसमें तीन बातें होतीं हैं – ज्ञान, ज्ञेय और परिज्ञाता | जिसका उसे ज्ञान होता है, ज्ञान को जानने वाला हो तथा जानने योग्य वस्तु होती है, उसी में मनुष्य को कर्म करने की प्रेरणा होती है | जब जीव को 'भगवान्' का ज्ञान ही नहीं है तो उसको भगवान् से मिलने की इच्छा कैसे होगी, हो ही नहीं सकती | जिसको संसार का ज्ञान है कि संसार में ही सुख है, संसार में ही रस है तो उसको संसार से ही मिलने की इच्छा होती है, संसार को ही प्राप्त करने की इच्छा होती है; इसीलिए प्रभु से मिलने की इच्छा उसको कभी नहीं होती है | जब मनुष्य कहीं से जानता है, सुनता है, समझता है कि आनन्द या रस या प्रेम एकमात्र 'प्रभु' के पास है, अन्यत्र संसार में कहीं नहीं है, यहाँ से ब्रह्मलोक तक कहीं भी नहीं है, संसार की किसी वस्तु में नहीं है | संसार के विषय अच्छे लगते हैं भगवान् की छाया से अर्थात् इनमें न आनन्द है, न प्रेम है, न रस है |

जो आनंद सिंधु सुखरासी | सीकर तें त्रैलोक सुपासी ||
सो सुखधाम राम अस नामा | अखिल लोक दायक बिश्रामा |

(श्रीरामचरितमानसजी, बालकाण्ड -१९७)

'श्रीभगवान्' ही आनन्द के समुद्र हैं, सुख का समूह हैं; बाकी अनन्त ब्रह्माण्डों में उसके आनन्द के एक बूँद की छाया है | 'भगवान्' ही सद्घन हैं, चिद्घन हैं, आनन्दघन हैं; अनन्त संसार को जो विश्राम मिलता है, वह उसी से मिलता है, हम लोग उसी से जी रहे हैं | जो अज्ञ (मूर्ख) प्राणी है, वह समझता है कि हम रोटी खाकर जी रहे हैं, हम पानी पीकर जी रहे हैं, हम किसी के सहारे जी रहे हैं; यह सब अज्ञान है | उपनिषदों में लिखा है कि मनुष्य अन्न (भोजन) के सहारे नहीं जी रहा है, 'भगवान्' के सहारे जी रहा है | अगर 'जीव' अन्न के सहारे जीता होता तो फिर लोग क्यों मरते हैं ? अन्न खाते रहते और सदा जीवित बने रहते; मरते क्यों हैं ? बल्कि ऐसा देखा जाता है कि अन्न खा-खाकर लोग मर जाते हैं | इसीलिए तैत्तिरीयोपनिषत् में लिखा है – **यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति | तद्ब्रह्मेति विजिज्ञासस्व ||** (तैत्तिरीयोपनिषत् ३/१) अर्थात् जहाँ से समस्त जीव पैदा होते हैं ...| वेदों में कहा गया है कि अनन्त संसार 'भगवान्' से ही पैदा होता है | कोई कहे कि हम तो अपने माँ-बाप से पैदा हुए हैं तो यह सब एक नाटक है | जाने कितनी स्त्रियाँ बाँझ रहतीं हैं, जन्म भर वे प्रयत्न करतीं हैं, फिर भी संतान पैदा नहीं होती है | वस्तुतः यह सारा संसार केवल भगवान् से ही पैदा होता है और उसी से सब जीते हैं, अन्न से नहीं जीते, पानी से नहीं जीते | भगवान् द्वारा प्रदान की गयी जीवन-शक्ति से ही मनुष्य जीता है | भगवान् ने स्वयं कहा – **पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ |**

जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ||(श्रीगीताजी ७/९)

"हे अर्जुन ! मैं ही पृथ्वी में पुण्य गन्ध हूँ, सूर्य और अग्नि में जो तेज है, वह मैं ही तो हूँ | सभी प्राणियों में उनका जीवन मैं ही हूँ |" अतः अन्न जीवन नहीं है, अन्न यदि जीवन होता तो लोग क्यों मरते ? खाते जाओ और जीते रहो लेकिन नहीं, ऐसा केवल दिखाई पड़ता है कि मनुष्य 'अन्न' से जी रहा है; वस्तुतः वह अन्न से नहीं जीता है | कितने ही लोग ऐसे होते हैं जो अन्न नहीं खाते हैं, 'फल, दूध, शाक' आदि लेते हैं; कितने ही लोग ऐसे होते हैं जो केवल जल ही पीते हैं | कितने ही योगी लोग तो

प्राणायाम के द्वारा केवल वायु के सहारे जीते हैं; आगे चलकर योग की सिद्धि में वायु भी बंद हो जाती है, समाधिस्थ होने पर वे वायु भी नहीं ग्रहण करते हैं, फिर भी जीते रहते हैं | जितना जीव अंतर्मुख होता है, उतना ही उसको बाहरी वस्तुओं की आवश्यकता नहीं रहती है; यह प्रकृति का एक नियम है | जीवन के बारे में एक सिद्धांत समझ लेना चाहिए कि 'मनुष्य' जितना 'सात्त्विक' होता जाता है, उतना ही उसका आहार घट जाता है, अल्प आहार लेता है; जितना वह 'राजस' होता है, ज्यादा आहार लेता है, 'तामस' होता है तो बहुत अधिक आहार लेता है; ये निश्चित बात है | भगवान् ने स्वयं कहा है – **अपरे नियताहाराः प्राणान्प्राणेषु जुह्वति |** (श्रीगीताजी ४/३०)

'नियत' अर्थात् बहुत थोड़ा खाने वाले यज्ञ करते हैं | बहुत थोड़ा खाना 'यज्ञ' है, युक्ताहार करना बहुत बड़ा यज्ञ है | योगी लोग उतना ही आहार ग्रहण करते हैं, जितने में प्राणों का पोषण हो जाए | जो 'सात्त्विक व्यक्ति' होगा, वह आध्यात्मिक होगा, भजन करेगा; भोग से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होगा | जो 'राजस' होता है, वह भोग भोगता है, इसलिए वह अधिक खाता है | 'तामस व्यक्ति' और अधिक खायेगा क्योंकि उसको खूब सोना है, बिस्तर पर पड़े रहना है, प्रमाद-आलस्य में उसका शरीर मोटा हो जाता है, उठ-बैठ भी नहीं सकता तो वह 'तामस' है | इसलिए भगवान् ने गीता में कहा कि 'यज्ञ' करने वाले नियत आहार ग्रहण करते हैं | 'यज्ञ' का मतलब केवल हवन करना ही नहीं होता है, यज्ञ का वास्तविक अर्थ है 'भजन' | भजनपरायण लोगों की पहचान होती है – 'नियताहाराः' बहुत थोड़ा वे खाते हैं | 'प्राणान्प्राणेषु जुह्वति' – 'प्राण' का अर्थ 'इन्द्रियाँ' भी है और 'प्राणवायु' भी; वे इन्द्रियों को प्राणों में अथवा प्राणों को इन्द्रियों में हवन करते हैं अर्थात् केवल जीवित रखते हैं |

सर्वेऽप्येते यज्ञविदो यज्ञक्षपितकल्मषाः | (गीता ४/३०)

'नियत आहार' करना बहुत बड़ा यज्ञ है और यदि अधिक खाओगे तो 'तामस' हो जाओगे | हम जो भोजन करते हैं, इसके तीन परिणाम होते हैं – एक तामस, एक राजस और एक सात्त्विक | हम लोग पाँचों तत्त्व खाते हैं | भोजन में हम लोग 'पृथ्वी अंश, जलांश, तेज अंश, वायु अंश और आकाश अंश' ग्रहण करते हैं | पृथ्वी अंश तो अन्न है, जैसे - रोटी आदि, इसमें पार्थिव अंश अधिक है; दूसरा जल है, तीसरा है 'तेज तत्त्व' जिन भोजनों में तेज तत्त्व अधिक होता है, चौथा है 'वायु' और पाँचवां है 'आकाश'; इन पाँचों को हम खाते हैं, कैसे खाते हैं ? जब मनुष्य अन्न अधिक खाता है तो अन्न का तामस परिणाम है 'मल' यह तामस अंश है, अधिक अन्न खायेंगे, आठ-दस रोटी खायेंगे तो तामस अंश 'मल' अधिक बनेगा; सारी शक्ति मल बनाने में चली जाती है | अन्न का राजस अंश है 'माँस', जब माँस बहुत बढ़ जाता है, मोटापा अधिक बढ़ जाता है तो धीरे-धीरे मनुष्य 'तामस' की ओर चला जाता है | 'रजोगुण' की परिणति 'तमोगुण' में होती है | 'माँस अधिक बढ़ना' दिखाता है कि इस व्यक्ति का अन्न 'राजस' बन गया है, इसका अन्न 'सात्त्विक' नहीं बना है, इसने जो कुछ खाया वह 'राजस' बन गया है क्योंकि माँस अधिक बढ़ गया है; यह शक्ल से ही पता चल जाता है कि अमुक व्यक्ति राजस है कि तामस है; इस सम्बन्ध में हमारे गुरुदेव श्रीप्रियाशरणबाबा महाराज एक सच्ची घटना बताया करते थे, वह इस प्रकार है कि सवा सौ वर्ष पहले 'पंडित बाबा रामकृष्णदासजी महाराज' गिरिराजजी में भजन करते थे, वे दिन में एक बार ही भिक्षा माँगने बाहर निकला करते थे, बाकी १६ घण्टे अपनी कुटिया में भजन किया करते थे; रात दो बजे से ही एक आसन से बैठकर भजन करते थे; यह ब्रज के पुराने साधुओं की रहनी थी | अब तो यह केवल कहानी रह गयी है बल्कि अब तो ऐसी कहानी कहने वाले भी नहीं रह गये हैं | अब तो साधुओं की सारी दिनचर्या ही बदल गयी है | समाज बदल गया, पुराना रहन-सहन बदल गया है | उन दिनों गिरिराजजी में एक महंतजी आये थे | महन्तों का शरीर बढ़िया भोजन करने से खूब हष्ट-पुष्ट हो जाता है; वे महन्तजी भी बहुत मोटे-ताजे थे, ऐसा लगता था कि मानो हाथी का बच्चा आया है | गिरिराजजी में आने पर वे ब्रजवासियों से मिले क्योंकि ब्रजवासियों के प्रति उनका झुकाव था; उन्होंने सोचा कि ब्रज में आने पर

यहाँ किसी अच्छे महात्मा का दर्शन करना चाहिए | ब्रजवासियों से उन्होंने इस बारे में पूछा तो वे बोले कि 'पंडित रामकृष्ण दास बाबा' यहाँ श्यामकुटी में बड़े सिद्ध महात्मा रहते हैं, लेकिन वे किसी से मिलते नहीं हैं, जब वे भिक्षा माँगने रात को बाहर निकलते हैं, तब ही कोई उनका दर्शन कर सकता है | 'पण्डित बाबा' ब्रजवासियों का बहुत सम्मान करते थे | महंतजी बड़े चतुर थे, उन्होंने ब्रजवासियों को अच्छी दक्षिणा दी | 'ब्रजवासियों' के बारे में एक कहावत है – संसार में सबका गुरु 'ब्राह्मण', ब्राह्मण का गुरु 'सन्यासी' और सन्यासी का गुरु 'ब्रजवासी' क्योंकि ब्रज में सन्यासी भी ब्रजवासियों के द्वार पर भिक्षा माँगने जाते हैं |

महन्तजी 'ब्रजवासियों' को लेकर 'पंडितबाबा' का दर्शन करने गये | ब्रजवासियों ने पंडित बाबा की कुटिया पर पहुँचकर उनसे कहा – 'पंडित बाबा ! यह महंत बाबा बड़ा भक्त है, इसको दर्शन दे दे |' ब्रजवासियों के दबाव से पंडित बाबा ने बाहर झाँका | ब्रजवासी महंतजी से बोले – 'महंत बाबा, तुझे जो कुछ पूछना है, इनसे जल्दी से पूछ ले |' महंतजी ने कहा – ' महाराज ! मैं भजन करना चाहता हूँ | आप कोई उपाय बतावें |' महंत को देखकर पंडित बाबा ने कहा – 'तुम भजन करोगे ?' महंतजी बोले – 'हाँ |' पंडित बाबा ने कहा – 'तुम्हारा यह शरीर तो तामस हो गया है, इसको सात्त्विक बना लो, फिर मेरे पास भजन करने के लिए आना |' महंतजी का विशाल मोटा शरीर था, खूब खा-खाकर हाथी के बच्चे की तरह बन गये थे | शरीर बढ़ तो जाता है किन्तु घटता नहीं है | सेठ लोग कितनी अधिक दवाइयाँ खाते हैं किन्तु उनका शरीर घट नहीं सकता है; यह लोहे का चना है, इसका बढ़ना तो आसान होता है | अब 'पंडित बाबा' ने महंतजी को ऐसा उपाय बता दिया कि इस जन्म में न तो उनका शरीर सात्त्विक हो सकता था और न ही भजन हो सकता था, इसलिए वे बेचारे चले गये ...|

.....

'श्रीभक्तिमार्ग' ही सर्वकल्याणकारी

(बाबाश्री द्वारा लिखित माताजी को 'पत्र')

(पत्र को स्वयं श्रीबाबामहाराज सत्संगकालीन समय में श्रोताजनों को पढ़कर सुना रहे हैं, जिसमें वे 'पत्र' के अतिरिक्त अपनी अन्य 'जीवन-घटनाओं' को भी कहते जा रहे हैं...) जब मैं पहली बार ब्रजवास करने ब्रज में आया तो अपनी माताजी का इकलौता पुत्र होने के कारण वे मेरे बिना घर में अत्यन्त व्यथित रहा करतीं थीं, अतः उनके कल्याण व उनको शांति प्रदान करने के उद्देश्य से मैंने उन्हें एक पत्र लिखा था | बाद में जब माताजी ब्रजवास हेतु 'बरसाने' में आ गयीं तो वह पत्र भी अपने साथ लायीं थीं; वह पत्र बहुत दिनों तक सुरक्षित बना रहा; उस समय मेरे पास पेन नहीं था, स्याही-कलम के द्वारा वह पत्र लिखा था | पहले तो एकबार प्रयाग में रहते समय मैं चित्रकूट भाग गया था; वहाँ छः महीने तक मैं चित्रकूट के जंगलों में रहा; उस समय घर वालों ने मेरी खोज के लिए अख़बार में मेरे बारे में छपवा दिया था | मेरे पिताजी अंग्रेजों के शासनकाल में आई. जी. ऑफिस में अधिकारी रह चुके थे, वह बहुत बड़े देशभक्त थे | सन् १९४२ के 'भारत छोड़ो आन्दोलन' में उन्होंने अपनी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया था; भारत की स्वतंत्रता के पूर्व ही उनकी मृत्यु हो चुकी थी, यदि वे जीवित होते तो उन्हें 'स्वतंत्रता सेनानी' का सम्मान भी मिलता | भारतवर्ष की महान विभूति श्रीमदनमोहनमालवीयजी उन्हें 'शुक्ल भगवान्' कहकर पुकारते थे | पिताजी बहुत बड़े आध्यात्मिक पुरुष भी थे | 'दशहरे का पर्व' प्रयाग में सदियों से मनाया जाता था; मुसलमानों के शासनकाल में उस पर रोक लगाई गयी और प्रयाग में 'रामदल की शोभायात्राओं' पर भी प्रतिबन्ध लगा दिया गया था | मेरे 'पिताजी और चाचाजी' ने मिलकर प्रयाग में 'दशहरे के उत्सव' तथा वहाँ के 'रामदल की शोभायात्रा' के कार्यक्रम को पुनः

आरम्भ कराया था; यह एक बहुत बड़ा ऐतिहासिक कदम था | पिताजी के प्रभाव के कारण मेरी फोटो पुलिस के बड़े-बड़े थानों में भी पहुँच गयी थी कि यह लड़का कहीं मिले तो इसे पकड़कर घर वापस लाया जाए; इससे बचने के लिए मैं लम्बे समय के लिए चित्रकूट के जंगलों में बहुत दूर चला गया था | छः महीने बाद कृपालुजीमहाराज के सत्संग-कार्यक्रम का चित्रकूट में आयोजन हुआ था; महाराजजी को पता था कि मैं अवश्य ही उस कार्यक्रम में आऊँगा, उनको मेरे बारे में पता रहता था कि मैं कहाँ हूँ...; अतः उन्होंने उस कार्यक्रम की सूचना देकर मुझे भी भाषण (व्याख्यान) देने के लिए बुलवाया था, उस सम्मेलन में सबसे पहले मैं ही बोलता था; उस कार्यक्रम में भारतवर्ष के प्रसिद्ध वक्ता आये हुए थे, जैसे – बिंदु गोस्वामीजीमहाराज, भारत के प्रसिद्ध विद्वान् देवनायकाचार्यजी, नील मेघाचार्यजी इत्यादि | उस समय मेरी खोज करते हुए माताजी भी उस कार्यक्रम में चित्रकूट आयीं थीं और अपने एक परिचित पण्डे के आवास पर रुकीं थीं; मेरे विरह में छः महीने तक उन्होंने भोजन नहीं किया था, अतः उनकी नेत्रदृष्टि बहुत कमजोर (क्षीण) हो चुकी थी, उनको ठीक से दिखाई नहीं देता था | जब मैं मंच पर भाषण दे रहा था तो पण्डे ने उनसे पूछा कि क्या यही तुम्हारा पुत्र है ? माताजी ने बताया कि हाँ, यही मेरा पुत्र है | पंडाल में तो उनसे मेरी भेंट नहीं हो सकी | वहाँ मैं प्रतिदिन सुबह 'मन्दाकिनी गंगा' में स्नान करने जाता था; पण्डे ने इसका पता लगा लिया था और माताजी को लेकर वहाँ आया | मुझे देखकर उसने श्रद्धा से बुलाया और माताजी के सामने ले जाकर खड़ा कर दिया | पहली बार तो मैं माताजी को पहचान ही नहीं सका ... मुझे देखकर माताजी उठकर खड़ी हुईं फिर गिर पड़ीं ..., पण्डे ने बताया कि ये आपकी माताजी हैं | मैं माताजी से मिला और उन्हें यह वचन दिया कि मैं रोज आपसे मिलने यहाँ आया करूँगा | उस समय मैं अलग कहीं रुका हुआ था; सम्मेलन कई दिन का था, इसलिए मैं प्रतिदिन माताजी के पास मिलने के लिए जाया करता था; जब मैं नित्य जाने लगा तो वहाँ के अधिकतर लोग माताजी के पक्ष में हो गये और कृपालुजीमहाराज का विरोध होने लगा कि इन्होने एक विधवा अनाथ स्त्री से उसके पुत्र को 'साधु' बनाकर अलग क्यों कर दिया ?

तब 'महाराजजी' ने मुझसे कहा कि तुम अपनी माताजी को प्रयाग में घर पर पहुँचा आओ; क्योंकि माताजी ने हठ कर लिया था कि मैं यहाँ से नहीं जाऊँगी, मैं तो यहीं अपने प्राण-त्याग करूँगी | उस समय फिर मैं उनको घर पहुँचाने के लिए प्रयाग गया | वहाँ दस-पाँच दिन मैं रहा भी जबकि घर में मन तो नहीं लगता था, मन तो ब्रज में पहुँच गया था | मेरी स्थिति ऐसी हो गयी थी कि नींद ही नहीं आती थी; मैं यमुना-किनारे 'बलुआ-घाट' चला जाता था और एक बँधी हुई नाव पर बैठा रहता तथा यमुनाजी की नीली धारा को देखकर इसी भाव में रात भर पद गाया करता कि यह जल 'ब्रज' से आ रहा है, मैं कब 'ब्रज' में पहुँचूँगा; इसी कारण मुझे नींद भी नहीं आती थी, अतः मैंने घर तो क्या छोड़ा, आगे चलकर स्वतः ही घर छूट गया |

जब तक मैं प्रयाग में माताजी के पास रहा तो प्रयास यही किया कि घर पर दिन-रात सत्संग चले किन्तु वह चल नहीं पाया | जब सत्संग नहीं चल पाया तो मैंने परिवारीजनों से कहा कि यदि मुझको ब्रज नहीं मिला तो मैं भी अपने प्राण त्याग दूँगा और आप लोग यहाँ मेरा शव देखोगे | मेरी बात सुनकर माताजी घबरा गयीं और बोलीं कि मरो मत...!!! तब मैंने उनसे कहा कि कोई बीच का रास्ता रख लो...; या तो आप मरेंगी अथवा मैं मरूँगा...!!! माताजी ने कहा – "अच्छा ! तुम 'ब्रज' चले जाओ किन्तु मुझको अपना समाचार देते रहना |" उनकी बात मानकर फिर मैं 'ब्रज' चला आया क्योंकि माताजी को यह विश्वास हो गया था कि बिना 'ब्रज' के तो इसकी मृत्यु ही हो जाएगी और वास्तव में 'ब्रज' के बिना मैं जीवित नहीं रह सकता था; इसी विवशता के कारण माताजी को मुझे 'ब्रजवास करने की अनुमति'

देनी पड़ी; यह मेरा इतिहास है | 'चित्रकूट' से मैं माताजी को लेकर प्रयाग गया और प्रयास किया कि घर में सत्संग चले किन्तु वह चल नहीं सका | अगर 'सत्संग' चलता तो हो सकता था कि मैं कुछ दिन और घर पर रुक जाता | मैंने 'ब्रज' आते समय माताजी को वचन दिया था कि मैं अपना समाचार आपको देता रहूँगा; अतः यहाँ से एक ही पत्र मैंने उनको लिखा था, वह बहुत विस्तृत था, उस पत्र को माताजी ने अपने पास सुरक्षित रख लिया था और प्रतिदिन उसको पढ़ा करतीं थीं | यहाँ तक कि जब वह 'ब्रज' में आयीं, तब भी उस पत्र को साथ लायीं थीं और ऐसा प्रतीत होता है कि इस पत्र के द्वारा ही उनको 'ब्रज' की प्राप्ति हो गयी | उस पत्र को मानमन्दिर के संतों ने कागज़ में लपेटकर सुरक्षित रख लिया था; जब मैंने उसको देखा तो वे पुराने दिन याद आने लगे | अपने प्रारम्भिक समय में यहाँ रहते समय मैं जो कष्ट सह रहा था, इस पत्र में उसका भी वर्णन है | शुरू में लोगों ने मुझे यहाँ रहने नहीं दिया था | मानगढ़ से भी मैं जहाँ-जहाँ गया, सबने मुझे धोखा ही दिया, साथ नहीं दिया ...|

अतः मैं सर्दी की ऋतु में पेड़ों के नीचे खुले में पड़ा रहता था; उस सब घटना को मैंने संक्षेप में इस पत्र में लिखा था; इस पत्र को देखकर अपना वह सब पुराना जीवन याद आया, इस पत्र में जो मैंने लिखा वह सुनाता हूँ –

अम्मा !

श्रीराधे !! प्रणाम !!!

तुमको बहुत दुःख है, यह मैं मानता हूँ क्योंकि संसार में केवल 'माँ का प्रेम' ही सर्वोत्कृष्ट है | अपने आज तक के जीवन के बहुत अनुभव के पश्चात् मैं लिख रहा हूँ कि मैंने यह देखा, जिसके लिए यदि कोई अपना गला काटकर भी दे किन्तु वह मनुष्य धोखा ही देता है; इसके पीछे बहुत- सी अनुभूतियाँ हैं, जो धोखा मुझे यहाँ मिला ...| इसीलिए साधु-समाज का संग न मिलने के कारण भी मैं पेड़ों के नीचे रहा करता था; यह प्रतिफल मैं आज भी अनुभव कर रहा हूँ | यही कारण है कि मैं एक स्थान पर रह नहीं पाता हूँ – कभी गह्वरवन में रहता हूँ, कभी मानमन्दिर में रहता हूँ, तो कभी कहीं दूसरी जगह रहता हूँ; कभी पेड़ों के नीचे पड़ जाता था, कभी मानगढ़ की छतों पर पड़ जाता था | थोड़े दिन का ही जीवन है क्योंकि जहाँ भी मैं रहता हूँ, सर्वत्र कहीं न कहीं कपट, स्वार्थ और झूठ ही मिलता है | 'सच्चा स्नेही व्यक्ति' आज तक न मिला...न मिला...न मिला...| अपनी इच्छा, स्वार्थ एवं रुचि का खून करके भी यदि दूसरे की रुचि और स्वार्थ का ध्यान रखो तो वह प्रसन्न रहेगा और स्नेह भी दिखायेगा तथा यदि बहिरंग व्यवहार से उसकी रुचि की पूर्ति न हुई तो वह कपट रखेगा | अतः केवल 'माँ' ही स्नेह कर सकती है | मुझे तुम सबकी याद आती है और ऐसा विश्वास है कि मैं जितना स्नेह तुम सबसे करता हूँ, उतना तुम सब मुझसे नहीं करती | कल चैतन्य-चरितावली में 'चैतन्य महाप्रभु' का चांचल्य पढ़ रहा था तो मुझे पीयूष की याद आई | एक बार उसको पढ़ाते समय कभी मैंने जोर-जोर से मारा था, इसका आज पश्चात्ताप होता है और मैंने आज अपना हाथ पृथ्वी पर पटक दिया | अब यदि कोई मेरे सामने किसी को मारता है तो मैं देख भी नहीं सकता | अब मेरे स्नेह में कदाचित् विवेक-सा भी है, फिर भी मैं सांसारिक दिखावे से इतना ऊबा हूँ कि पत्रादि के द्वारा आडम्बर करना मुझे अच्छा नहीं लगता | 'दीदी' ने कोई पत्र नहीं लिखा, उनका 'नियंत्रण' और 'गंभीरता' अच्छी लगी किन्तु क्या उनके पत्र न लिखने से मेरा स्नेह घट गया बल्कि बढ़ गया है | मैं तुम सबकी अधिक याद करता हूँ और चाहता हूँ कि तुम सब जल्दी कल्याण-पथ पर चलो | यही कारण है कि प्रत्येक पत्र में उनके लिए भी मैं लिख देता हूँ | यह पत्र मैं बहुत सोचकर नहीं लिख रहा हूँ, अतः तुम इसे खूब सोच-समझकर पढ़ना | मास्टर साहब (मेरे बहनोई) का पत्र आया था, उसमें तुम्हारा हाल पूछा था; 'हाल' का मतलब कि वे (माताजी) कैसे जियें और हम भी कैसे जियें; ये शर्त लग गयी थी; अतः तुमको इस बात का निर्णय करना है | तुमको दुःख होता है, अतः तुम जो चाहोगी वही मैं करूँगा, यह विश्वास रखो, चाहे मेरा परमार्थ नष्ट हो जाए;

कई रास्ते मैं लिखता हूँ, तुम निर्णय कर लो –प्रथम तो यह कि जब तक तुम जीवित हो, मैं तुम्हारे पास रहूँ और तुम्हारी सेवा करूँ तथा तुम्हारी जीविकार्थ थोड़ा उद्यम भी करूँ, फिर तुम्हारी मृत्यु के उपरान्त इसी प्रकार ब्रज में आ जाऊँ, किन्तु इससे थोड़े समय तक तुम्हें शारीरिक लाभ होगा परन्तु पारमार्थिक हानि होगी | अरे ! तुम तो बिना कुछ किये ही पारमार्थिक लाभ उठा सकती हो दूसरे मार्ग के द्वारा, जो पत्र में नीचे लिखा हुआ है – 'हानि' इसलिए है क्योंकि इससे मेरी गति मन्द होगी, मेरी पारमार्थिक उन्नति से जो तुमको लाभ होगा, वह रुक जायेगा; यह पहला हल था |

दूसरा मार्ग यह है कि तुम यह समझो कि मैंने प्रभु की सेवा में एक खिला हुआ पुष्प चढ़ा दिया है; मुरझाया हुआ पुष्प तो सभी देते हैं; यद्यपि तुमने क्या चढ़ाया, मैं स्वयं ही 'ब्रज' में चला आया और मैं भी क्या आया, 'उन्होंने' स्वयं खींचा; किन्तु तुम यदि यह भाव रखोगी कि मैंने एक सुन्दर पुष्प प्रभु की सेवा में चढ़ा दिया, यदि इतना त्याग कर सको तो तुम्हारा और मेरा क्या लाभ होगा, इसे कहा नहीं जा सकता...!!! तुमने 'पुष्प' सजाया, मुझे पढ़ाया-लिखाया...| (माताजी ने मुझे बड़े ठाठ से पढ़ाया-लिखाया बल्कि हाईस्कूल तक तो एक नौकर मुझे स्कूल पहुँचाने जाया करता था |) तुमने पढ़ा-लिखाकर 'पुष्प' को सजाया किन्तु खिलने पर उसे स्वयं न लेकर यदि सच्ची भावना से ईश्वर को अर्पित कर दिया, इसे प्रभु की कृपा समझते हुए प्रभु को ही आनन्दपूर्वक समर्पित कर दोगी तो वे कितना प्रसन्न होंगे ...!!! **त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये ...!!**

'ध्रुव' के उपाख्यान में 'सुनीति' का परम कल्याण हुआ | मेरा तात्पर्य यह नहीं है कि मैं ध्रुव हूँ, मैं तो बड़ा नीच हूँ क्योंकि मैंने न तो मातृ-सेवा किया, न प्रभु-सेवा किया, फिर भी इतना पता है कि तुम्हारा परम कल्याण भगवत्कृपा से होगा और तुम्हारी अन्तरात्मा से ही मेरा भी कल्याण होगा... | प्रश्न है भाव का ... वस्तु खराब ही क्यों न हो .... भगवान् ने शबरी के जूठे बेर खाए, सुदामा के तंदुल (सड़े चावल) खाए | एक कथा में प्रसंग है कि भगवान् को गोबर भी चढ़ाया गया | विदुरानी का जूठा साग प्रभु ने खाया | इसलिए भाव शुद्ध अवश्य होना चाहिए | अतः मैं खराब हूँ अथवा अच्छा, इसका प्रश्न नहीं है | जिसके हाथ में सर्वस्व सौंपा, अन्ततोगत्वा वह ही सब कुछ सँभालता है | अरे, 'दुःख' तो कसौटी है, इसमें खरे उतरना ही साधना और सिद्धि है | दुःख में अधिक प्रसन्न होना एवं उसे भगवत्कृपा समझना सबसे बड़ी साधना है | समस्त साधनों का यही फल है कि प्रत्येक दशा में ईश्वर की कृपा का अनुभव हो ...|

.....

(बाबाश्री का इंटरव्यू) परमधर्म 'श्रीइष्ट-शरणागति'

विदेश में रहने वाले एक जिज्ञासु अनिवासी भारतीय ने विगत कुछ महीनों पूर्व श्रीमानमन्दिर, बरसाना में आकर श्रीबाबामहाराज का इंटरव्यू लिया, आध्यात्मिक-जीवन से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछे, जिनका बाबाश्री ने बहुत सरलतापूर्वक उत्तर दिया...| प्रस्तुत है उसी आध्यात्मिक प्रश्नोत्तर का संक्षित विवरण ...

प्रश्नकर्ता – श्रीबाबामहाराज ! पहले तो मैं आपके चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करना चाहता हूँ तथा कुछ पूछने से पहले आपका आशीर्वाद भी चाहिए | हम लोग एक documentary film बना रहे हैं जिससे कि विश्व के लोगों को 'आध्यात्मिक जीवन' का ज्ञान मिले तथा भक्ति की भी प्राप्ति हो सके | हम लोग विदेश से आये हैं और आपके द्वारा जानने-समझने के लिए हम जैसे छोटे-से जिज्ञासु के कुछ प्रश्न हैं ...| सबसे पहले तो आप कृपा करके अपने जीवन के बारे में कुछ बतायें कि आप ब्रज में क्यों आये ? उस समय आपकी क्या आयु थी और कितने वर्षों से आप यहाँ रह रहे हैं ?

बाबाश्री – मैं सन् १९५४ में ब्रज में आया था | बाकी यहाँ रहते कितने वर्ष बीत गये, इसका मुझे कोई अंदाज नहीं है, फिर भी ६५-७० वर्ष से मैं यहाँ 'बरसाना, गह्वरवन' में रह रहा हूँ | अभी कुछ समय पहले बीमारी में डॉक्टरों के इलाज के प्रतिकूल जबरदस्ती हठ करके अस्पताल छोड़कर मैं गह्वरवन में आ गया तो बिल्कुल ठीक हो गया, यह आश्चर्यजनक घटना देखकर भारत के

प्रसिद्ध डॉक्टर ने मुझसे कहा कि आप miracle baba 'जादूगर बाबा' हैं; जबकि मेरे पास जादू आदि कुछ नहीं है; मैं तो केवल राधारानी के भरोसे यहाँ पड़ा हुआ हूँ |

जबसे 'ब्रज' में आये हैं, अपने पास एक पैसा भी नहीं रखा | मानमन्दिर से प्रतिवर्ष विशाल ब्रजयात्रा चलती है, उसमें करोड़ों रुपये खर्च होते हैं किन्तु मुझे पता नहीं कि कहाँ से पैसा आता है और कौन देता है, इसका मुझे कुछ पता नहीं और अभी तक जितनी भी ब्रजयात्रायें हुईं, सभी निःशुल्क थीं एवं सभी का कुशलतापूर्वक श्रीजी की कृपा से निर्वाह हो गया | सबसे अधिक ब्रजयात्री भी मानमन्दिर की ही यात्रा में ही सम्मिलित होते हैं | लगभग १५-२० हजार से कम यात्री किसी भी ब्रजयात्रा में नहीं रहते | यहाँ मानमन्दिर पर भी जितने लोग रहते हैं, किसी से भोजन का अथवा रहने का कोई शुल्क नहीं लिया जाता है, जो भी आता है, सभी यहाँ निःशुल्क भोजन करते हैं | खर्चा चलाने के लिए बाहर से कोई चन्दा आदि यहाँ नहीं लिया जाता; केवल श्रीराधारानी ही सबका निर्वाह करतीं हैं |

इसीलिए हमलोग कोरोना आदि महामारी को भी कुछ नहीं समझते | राधारानी के ही भरोसे इस वर्ष कोरोना-काल में भी हमारी 'राधारानी ब्रजयात्रा' सारे ब्रज में परिक्रमा कर आई और किसी भी व्यक्ति को कोरोना नहीं हुआ |

प्रश्नकर्ता – बाबा महाराज ! गुरु क्या होता है ?

बाबाश्री – 'गुरु' वही है जो 'श्रीजी की सच्ची शरणागति' बतावे | आजकल के अधिकतर लोग अपने स्थानों को चलाने के लिए शिष्य-शिष्या बनाते हैं, पैसा कमाते हैं | मानमन्दिर से कई बालिकायें प्रचार करतीं हैं | मुरलिकाजी तो विदेशों में जैसे अमेरिका, इंग्लैण्ड और कनाडा आदि में भी प्रचार कर चुकीं हैं; इन्होंने किसी से एक भी पैसे की न तो याचना की और न ही पैसा अपने पास रखा | अपनी इच्छा से यदि कोई भगवत्सेवा के लिए कुछ देता है तो उसे हम लोग ठुकराते नहीं हैं क्योंकि स्वयं भगवान् भी अपने भक्तों की भेंट को ठुकराते नहीं हैं | मानमन्दिर में न तो कहीं से कोई चन्दा किया जाता और न ही किसी से दान माँगा जाता है; यहाँ का सारा आर्थिक व्यय श्रीजी की इच्छा-करुणा-दया से चल रहा है और इसी तरह सदा चलेगा...|

प्रश्नकर्ता – बाबा महाराज ! भारत में बहुत-से अपने को आध्यात्मिक-गुरु बताने-कहलवाने वाले ऐसे भी लोग हैं, जिनकी बदनामी हुई व कलंक भी बहुत लगा है | 'भारत' जो इतनी संस्कार वाली भूमि है तो यहाँ पर ऐसा क्यों होता है ?

बाबाश्री – अब ऐसा क्यों और कैसे होता है ? ये तो भगवान् ही जानें ...; यह तो 'मायापति' ही जानता है कि माया की लीला क्यों होती है ? 'संसार' माया में चल रहा है लेकिन हमारे मानमन्दिर में ऐसी कोई भी विकृतियाँ नहीं हैं; यहाँ के रहने वाले सभी लोग परम निष्किञ्चन व भोग-ऐश्वर्य से सर्वथा दूर हैं, यहाँ के साधु-संत भिक्षावृत्ति से रहते हैं | बाहर के आने वाले हजारों भक्तजन यहाँ निःशुल्क भोजन करते हैं, किसी से भी पैसा नहीं लिया जाता है; ये मेरा अनुभव है |

प्रश्नकर्ता – बाबा महाराज ! धर्म क्या है ?

बाबाश्री – जो धारण किया जाए, उसको धर्म कहते हैं | 'धारण' क्या किया जाए, सबसे बड़ा धर्म है – 'भगवान् की शरणागति' | गीता में भगवान् ने कहा है –

"**सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज |"**

(श्रीगीताजी १८/६६)

आजकल हमलोग साधु बन जाते हैं किन्तु पैसे का आश्रय लेते हैं, शिष्य-शिष्याओं का आश्रय लेते हैं; ये सब अविद्या है, इसको छोड़ दें तो अभी सब माया दूर हो जाएगी | मैं कोई साधु-संत नहीं हूँ लेकिन इसी विश्वास पर रह रहा हूँ और इसी विश्वास के साथ मैं आप लोगों से कहता हूँ कि आप सब लोग अपना 'मास्क' हटा लीजिये | जब तक यहाँ हो, कोई नहीं मरेगा; आगे जो होगा, वह तो भगवान् जानता है | ('कोरोना' बीमारी के भय से लोग अपने-अपने मुँह को ढके हुए थे, बाबाश्री ने कहकर के सबके 'मास्क' हटवा दिए |)

प्रश्नकर्ता – बाबा ! 'प्रेम' वस्तु क्या है ?

बाबाश्री – 'प्रेम' तो उन्हीं भगवान् का रूप है; 'प्रेम' वह वस्तु है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता, उसको अनिर्वचनीय कहा गया है, वह उनकी कृपा से ही प्राप्त होता है; किसी सम्प्रदाय अथवा जीव के प्रयत्न से वह 'प्रेम' नहीं मिलता है | उपनिषत् में भी वर्णित है –

यमेवैष वृणुते तेन लभ्यस्तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूँ स्वाम् | (कठोपनिषत् १/२/२३)

वह 'प्रभु' जिसका वरण कर लेता है, उसी के सामने अपना स्वरूप खोलता है, वही 'भगवान्' को जान सकता है, जैसे – 'सती स्त्री' सबके सामने विवस्त्र नहीं होती है, जिसका वरण करती है, उसी को अपना शरीर दिखाती है; उसी प्रकार 'प्रभु' जिसको वरण कर लेता है, उसी के सामने अपना सब कुछ खोल देता है |

यह गुन साधन तें नहिं होई |
तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई ||
(श्रीरामचरितमानसजी, किष्किन्धाकाण्ड – २१)

प्रश्नकर्ता – बाबा ! वेदों में इतना स्पष्ट क्यों नहीं लिखा है कि 'श्रीकृष्ण' ही भगवान् हैं ?

बाबाश्री – वेद में लिखा है –

"रसो वै सः रसं ह्येवायं लब्ध्वा आनन्दी भवति |"
(तैत्तिरीयोपनिषत् २/७)

'सः' पुल्लिंग का शब्द है अर्थात् वह 'भगवान्' रसरूप है, उस रस को प्राप्त करके 'जीव' आनन्दमय हो जाता है | वह 'रस' क्या है, यह साक्षात् 'श्रीकृष्ण' ने ब्रजलीला में दिखाया कि यह 'रस' है, ब्रज में उस रस का 'महारास' हुआ ('रसानां समूहः रासः' दिव्य रसों का सम्मलित स्वरूप ही 'महारास' है |) उसमें अनन्त जीवों का सम्मिलन हुआ, उसमें कोई आधि-व्याधि नहीं थी; इस संसार में मनुष्य इस बात को पढ़ता है, जानता है, समझता है, कथायें होती हैं किन्तु क्रिया में नहीं कर पाता है, क्रिया में वही करेगा जिसका 'प्रभु' वरण कर लेगा, 'वरण' उसी का करता है, जिसकी सच्ची शरणागति होती है; चाहे वह किसी देश का हो, किसी वर्ग का हो, किसी समाज का हो | जिसका 'प्रभु' ने वरण कर लिया, वह चाहे 'शूद्र है, पापात्मा है, कोई भी है' उसी को 'भगवान्' मिलता है; वह न तो आचार्यों को मिलता है, न विद्वान् को मिलता है, न धनी को, न समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति को और न ही राजा को मिलता है; जिसको 'प्रभु' वरण कर लेता है, बस उसी को मिलता है ...|

प्रश्नकर्ता – बाबा महाराज ! मान लीजिये किसी ने मनुष्य योनि में जन्म लिया और उसके मन में बहुत-सी भौतिक इच्छायें हैं तथा प्रयत्न करते हुए भी कि हम साधन करें, भजन करें; फिर भी बहुत सारे संस्कार रह जाते हैं तो उसका उपाय क्या है ?

बाबाश्री – उसका उपाय यही है कि प्रभु की शरण में चले जाओ, जैसा कि 'भगवान्' ने गीता में कहा है –

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज |
अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः ||
(श्रीगीताजी १८/६६)

तू शोक मत कर, मेरी शरण में आ जा ...|

'जीव' शरण में चला जाये, बस और उसे कुछ नहीं करना है |

प्रश्नकर्ता – बाबा ! मैं 'वेदों' के बारे में एक प्रश्न करना भूल गया हूँ | आपने कहा कि वेदों में 'भगवान्' के बारे में कहा गया है – 'रसो वै सः' लेकिन वेदों में इतने सारे श्लोक हैं तो फिर 'भगवान्' के बारे में इतना ही क्यों कहा गया ?

बाबाश्री – क्योंकि 'भगवान्' रसरूप है और कुछ नहीं है, न हाथ है, न पाँव है, न और कुछ है; केवल रसरूप है, उस 'रस रूप' की अभिव्यक्ति करने के लिए ही भगवान् 'कृष्ण' बने और 'प्रेम' का वितरण किया, 'प्रेम' क्या है, यह उन्होंने दिखाया, उन्होंने ब्रज के सभी जीवों को, यहाँ तक कि ब्रज के 'कुत्ता-बिल्ली, पशु-पक्षियों' को भी 'प्रेम' दिया, नदी-सरोवर, वन-पर्वत आदि यहाँ का चराचर सब कुछ 'प्रेममय' हो गया; जैसे - वेदों में लिखा है – **"सर्वं खल्विदं ब्रह्म"** वैसे ही सब कुछ 'कृष्णमय' है, उसकी कृपा से ही यह अनुभव होगा, किसी साधन से ऐसा अनुभव नहीं होता है और कृपा के लिए 'शरणागति' चाहिए, शरणागति के लिए 'महापुरुष' चाहिए जो 'सच्ची

शरणागति' सिखायें | आज हमलोग भोग, धन और शिष्य-शिष्या आदि बनाना सिखाते हैं, ये सब अविद्या है |

प्रश्नकर्ता – बाबा महाराज ! अगर कोई दूसरे धर्म का अनुयायी है, मान लीजिये कि वह ईसाई है अथवा मुसलमान है, श्रद्धा से अपने धर्म के पथ पर चलता है तो उसको 'भगवान्' की प्राप्ति होगी कि नहीं ?

बाबाश्री – जहाँ श्रद्धा है, वहाँ 'भगवान्' की प्राप्ति हो जाएगी | विदेशों में बड़े-बड़े भक्त हुए हैं, 'रबिया' हुई है, वह अरब देश की थी, उसे भी 'भगवान्' मिले | 'भगवान्' किसी देश के आधीन नहीं हैं, किसी जाति के आधीन नहीं हैं; इसी सिद्धांत के आधार पर 'प्रभुपादजी' ने 'अंतर्राष्ट्रीय कृष्णभावनामृत संघ' (Iskcon) संस्था की स्थापना की | जब प्रारम्भ में 'इस्कॉन Iskcon' के लोग वृन्दावन आये थे तो वहाँ के लोगों ने यह सोचकर उनका बहिष्कार कर दिया था कि ये तो बाहर के म्लेच्छ हैं, परन्तु हमारे मानमन्दिर के लोगों ने उनका बहिष्कार नहीं किया | जो 'भगवान्' की शरण में आ गया है, बस वही ग्राह्य है 'चाहे वह किसी जाति का है, किसी देश का है, किसी वर्ग का है, स्त्री है, पुरुष है, चाण्डाल है' वह भी ग्राह्य है |

श्वपचहु श्रेष्ठ होत पद सेवत,
बिनु गोपाल द्विज जनम न भावै |
सोई भलो जो रामहि गावै ||

हमारे यहाँ के महापुरुषों ने ऐसा लिखा है कि भक्तिवान् 'चाण्डाल' भी श्रेष्ठ है |

अहो बत श्वपचोऽतो गरीयान्
यज्जिह्वाग्रे वर्तते नाम तुभ्यम् |
तेपुस्तपस्ते जुहुवुः सस्नुरार्या
ब्रह्मानूचुर्नाम गृणन्ति ये ते || (श्रीभागवतजी ३/३३/७)

सनातन धर्म में सबसे नीच चाण्डाल को माना गया है, वह भी ब्राह्मण से श्रेष्ठ है जिसकी जिह्वा पर 'भगवान्' का नाम आ गया | भगवान्' का नाम तुमने ग्रहण किया तो सारी तपस्यायें कर लीं, सब यज्ञ कर लिए; इसीलिए कलियुग में महापुरुषों ने केवल हरिनाम ही चलाया और इसलिए 'रामायण' पूज्य मानी गयी | ब्रज में रसखानजी भी आये, वे पठान थे | बहुत से मुसलमान भक्त भी हुए हैं, बहुत से विदेशी भक्त भी हुए हैं | जिसकी 'भगवान्' में शरणागति हो गयी, वह उनकी कृपा से भवपार हो गया... |

प्रश्नकर्ता – बाबा महाराज ! भक्ति के मार्ग में सबसे बड़ा विघ्न क्या है ?

बाबाश्री – 'भगवान् की शरणागति' के विरोध में जो बातें हैं, वे ही सब विघ्न हैं और जो शरण के अनुकूल हैं, वे ठीक हैं | हम सब कुछ छोड़कर प्रभु की शरण में आ गये, चाहे हम पापी हैं, चाहे चाण्डाल हैं, चाहे ब्रह्महत्यारे हैं, चाहे कोई भी हैं; भगवान् की शरण में जाओ, बस उसी समय तुम्हारा कल्याण हो जायेगा, चाहे तुम किसी भी देश के हो, किसी भी धर्म के हो, किसी जाति के हो, जो शरण में गया, उस पर कृपा होती है |

प्रश्नकर्ता – बाबा महाराज ! आप पूरे विश्व को क्या सन्देश देना चाहते हैं जिससे कि सभी का कल्याण हो |

बाबाश्री – सबके कल्याण के लिए भगवान् ने गीता में एक ही बात कही है – **सर्वधर्मान्परित्यज्य ... मा शुचः|** "सभी विचारों को, सभी धर्मों को छोड़ दो; किस धर्म के हो, क्या हो, किस देश के हो, ये सब छोड़ दो; केवल मेरी शरण में आ जाओ, मैं तुम्हें सारे पापों से मुक्त कर दूँगा, कोई शोक मत करो, कोई संदेह मत करो |" यह भगवान् की वाणी है |

सर्वोपनिषदो गावो दोग्धा गोपालनन्दनः |
पार्थो वत्सः सुधीर्भोक्ता दुग्धं गीतामृतं महत् ||

समस्त उपनिषद गायें हैं और उनका दोहन करने वाले गोपाल हैं | गोपालजी ने उपनिषदों का दोहन करके 'गीतामृत' निकाल करके सबको दिया | 'गीतामृत' का सार यही है कि सारे धर्मों को छोड़ दो | ये सब जितने भी अलग-अलग धर्म हैं, इन सबको छोड़ दो ...| "मामेकं शरणं व्रज" भगवान् कहते हैं कि अनन्यभाव से मेरी शरण में आ जाओ | "अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः" मैं तुम्हें समस्त पापों से मुक्त कर दूँगा, यह मेरा व्रत है; शोक मत करो, सन्देह मत करो, कोई प्रश्न मत करो, मेरी शरण में आ जाओ |

श्री राधारानी ब्रज यात्रा 2021

RNI Reference No. 1313397 - Registration No. UP BIL-2017/72945 - Title Code UP BIL-04953
Postal Regd. No. MTR 093/2021-2023

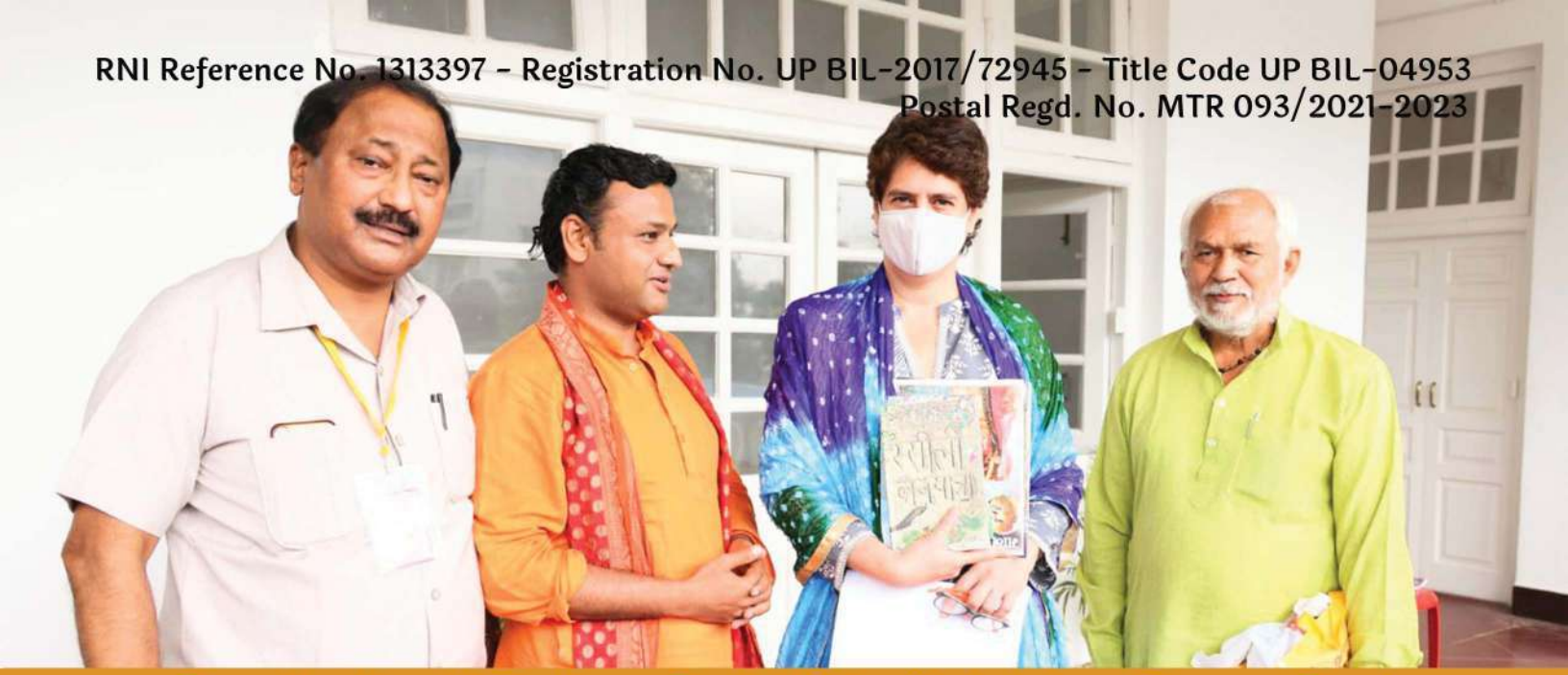

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की राष्ट्रीय महासचिव श्रीमती प्रियंका गाँधी जी को श्री मान मंदिर द्वारा प्रकाशित अनंत ब्रज-रस-सागर रूप पुस्तक "रसीली ब्रजयात्रा" की प्रति भेंट की गयी।

ब्रज की रक्षा के प्रति समिति एवं राजस्थान सरकार के आपसी सहयोग की मिसाल एवं आंदोलन की सफलता।

ब्रज पर्वत एवं पर्यावरण संरक्षण समिति की राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत जी एवं अन्य अधिकारी गण के साथ बैठक।

श्री मान मंदिर सेवा संस्थान के लिए प्रकाशक/मुद्रक एवं संपादक राधाकांत शास्त्री द्वारा Gupta Offset Printers A -125 /1, Wazirpur Industrial Area, New Delhi, 110052 से मुद्रित एवं मान मंदिर सेवा संस्थान, गह्वर वन, बरसाना, मथुरा (उ.प्र.) से प्रकाशित